4

बालक को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

JAINISM WITH ART

कला द्वारा संस्कार सिंचन

अनुयोगाचार्य श्री नयचंद्रसागरजी म.सा.के शिष्य

मुनि श्री सुमतिचंद्र सागरजी म.सा.

जीनशासन के जहान मे....कौन बने महान...

Who is the Greatesh of Them All ?

सर्व मंत्रो मे.....नवकार महामंत्र महान

Of all Mantras.....Navkar Mahamantra is the Greatest

सर्व यंत्रो मे.....सिद्धचक्र महायंत्र महान

Of all Yantras, Siddhachakra Mahayantra is the Greatest

सर्व पर्वतो मे.....मेरुपर्वत महान

Of all Mountains.....Meru Parvat is the Greatest

सर्व तीर्थो मे.....शत्रुंजय तीर्थ महान

Of all Tirthas.....Shatrunjaya Tirtha is the Greatest

सर्व नदीयो मे.....गंगा नदी महान

Of all Rivers.....Ganga Rive is the Greatest

सर्व समुद्रो मे.....स्वयंभूरमण समुद्र महान

Of all Oceans.....Swayambhuraman Ocean is the Greatest

सर्व पक्षियो मे.....हंस पक्षी महान

Of all the Birds.....Swan is the Greatest

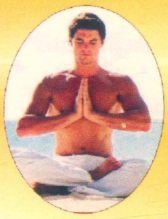

सर्व तपो मे.....वीरास्थानक तप महान

Of all Tapas (Penances).....Vishsthanak Tapa is the Greatest

सर्व वृक्षो मे.....कल्पवृक्ष महान

Of all theTrees.....Kalpavruksha is the Greatest

सर्व पशुओ मे.....सिंह महान

Of all the animals.....Lion is the Greatest

सर्व राजाओ मे.....चक्रवर्ति राजा महान

Of all the Kings.....Chakravarti king is the Greatest

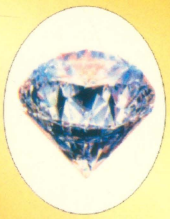

सर्व रत्नो मे.....चिंतामणि रत्न महान

Of all the gems.....Chintamani is the Greatest

सर्व देवो मे.....इन्द्र महान

Of all the Devas.....Indradev is the Greatest

सर्व औषधियो मे.....अमृत महान

Of all the Medicines.....Amrit (Nectar) is the Greatest

सर्व दर्शनो मे.....जैन दर्शन महान

Of all Darshans.....Jain Darshan is the Greatest

बालक को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

JAINISM WITH ART

कला द्वारा संस्कार सिंचन

Year 1st | **Edition 4th** | **(Continuous edition 4th)**

ૐ હ્રીં

બા - બાલિશ પ્રવૃત્તિ છોડીને
લ - લક્ષ્યવંત બની
ક - કર્તવ્ય નિષ્ઠ બને તે આદર્શ બાલક
જન્મ્યો એટલે બાલક તો બને જ
પણ...
સદ્ સંસ્કાર મળે તો આદર્શ બાલક બને.
બસ.....
બાલકમાંથી આદર્શ બાલક
બનાવવા માટે જ આ.....
સંસ્કાર શ્રેણીનું
ચોથું ચરણ તમારી સામે છે.
આદર્શ બાલક બની...
માતાપિતાના સાચા સેવક બનો..
જિન શાસનના આરાધક બનો
જન-જનના ચાહક બનો...
જીવ-જીવ-પ્રત્યે દયાળુ બનો..
એજ શુભ આશીર્વાદ...
નયચંદ્રસાગર

-: प्रेरणा :-

वर्धमान तपोनिधि, शासन प्रभावक

अनुयोगाचार्य **श्री नयचंद्रसागरजी म.सा.**

-: मार्गदर्शक :-

मुनि श्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा.

-: संयोजक :-

मुनि श्री सुमतिचंद्रसागरजी म.सा.

-: प्रकाशन :-

पूर्णानंद प्रकाशन

सूचना :
किसी को भी इन पुस्तको की प्रभावना करनी हो या नये सदस्य बनना हो तो नीचे दिए गए ऐड्रेस पर संपर्क करे। १ से ४ अंक की परीक्षा ली जायेगी इसलिए पुस्तक संभालकर रखे।

Instruction :- An Exam will conducted regarding 1 to 4 Edition joining so please keep this book safely.

महाराष्ट्र विभाग

मुलुंड - भूपेन्द्रभाई	98202 93269
बोरिवली - धरणेन्द्रभाई	98925 51590
मलाड - दिपकभाई	98202 44742
घाटकोपर - रुपेशभाई	93222 31001
माटुंगा - रसीलाबेन	97274 05993
डोंबिवली - भावेशभाई	90291 64654
पायधुनि - कल्पेशभाई	93245 23382
दादर - हस्तिकाबेन	98928 88966
अंधेरी - झवेरबेन	98334 94959
गोरेगांव - पीकीबेन	99695 45565
भायंदर - गौरवभाई	98331 39883
भायखला - रसिलाबेन	93211 04850
चोपाटी - मुकेशभाई	93222 78552
वालकेश्वर - भाविकभाई	98211 66679
पार्ला - बीनाबेन	98332 90137
थाणा - रमेशभाई	98197 42920
पूना - संदिपभाई	94225 12059
नासिक - राकेशभाई	97300 11110
बेंगलोर - हर्षिलभाई	99000 15784

गुजरात विभाग

सुरत - विपुलभाई	98241 02051
सुरत - देवांगभाई	97268 25745
वडोदरा - विपुलभाई	98980 61823
वडोदरा - आकाशभाई	94274 60140
अमदावाद - संजयभाई	93753 37141
अमदावाद - कौशिकभाई	93279 95499
उंझा - विजयभाई	99250 11774
महेसाणा - भावीनभाई	98792 18081
नवसारी - विजयभाई	98245 78904
राजकोट - प्रकाशभाई	93741 02061
जामनगर - निशीतभाई	94299 41554
पालनपुर - जगदीशभाई	94293 61149
वलसाड - धर्मेशभाई	94277 86683
गोधरा - केतनभाई	93277 11077

अेम.पी. विभाग

श्री नवकार परिवार (सम्यग् ज्ञान विभाग)

अमीतभाई मुणत	98272 75740
प्रविणभाई गुरुजी	94245 04078

माता-पिता को एक नम्र निवेदन

आज के इस दौर में इलेक्ट्रीकसीटि ने बाल-मानस को बेहद दुष्प्रभावीत किया है । बालक पिक्चर, इन्टरनेट, गेम्स, फेसबुक विगेरे मे खुद के समय को पुरा करते है । इलेक्ट्रीसीटी ने बच्चो के तन को ढीला और मन को मैला बना दिया है ।

एसा हाहाकार मचाने वाले टी.वी., कम्प्युटर, विडियो गेम ने आज भारत मे बेन्ड बाजे के साथ हर घर मे आसन जमा लिया है । दिन के दौरान कोई भी करते हुए सभी का ध्यान टी.वी. के प्रोग्राम पर ही मंडराता रहता है ।

बच्चो के जनरल नोलेज के बहाने से घर के बड़ो ने स्वयं के घर मे टी.वी. की लाइन लगाई है । जनरल नोलेज का विकास तो दुर रहा पर संतानो के संस्कार का विनाश अवश्य हो गया । मुस्लिम कौम एवं अंग्रेज इस देश का जितना नुकसान, हथियार व विषेले शिक्षण द्वारा नही कर सके, उससे दुगुना नुकसान घर मे डेरा डाले हुए टी.वी. कम्प्युटर कर रहे है ।

संस्कार समाप्त हो चुके है । स्कुल के लेशन अस्त-व्यस्त होने लगे है । धार्मिक पाठशालाए मृतप्रायः हो रही है । बालको के स्वभाव क्रोधी, चिढ़ाकु, गुस्साखोर और जुल्मी बनने लगे है । बालको की बोल-चाल मे, खान-पान मे, जीवन के व्यवहार मे, सर्वत्र स्पष्ट रुप से फिल्मो की गहरी असर दिख रही है । आस्तिकता, सात्विकता या धार्मिकता का तो नामोनिशान भी नही रहा है ।

दस वर्ष के बाद घोर अंधकार और आतंकमय समय का आगमन प्रत्यक्ष ही है । एक दिन एसा आएगा जब बेटा-बहु हिल स्टेशन पर होंगे और माता-पिता वृद्धाश्रम की शुद्ध हवा खा रहे होंगे ।

इन तमाम घटको का चिन्तन कर आपके बालको को कुसंस्कारो की आग से बचाने के लिए **"Jainism with Art"** **"कला द्वारा संस्कार सिंचन"** श्रेणी का प्रारंभ किया है । १ से ४ श्रेणी द्वारा आपके बालक मे क्या परिवर्तन, क्या वृद्धि हुई इसकी जानकारी हमे पत्र के माध्यम से प्रकाशन के एड्रेस पर भेजिएगा ।

आपके नौनिहाल जैन शासन को प्राप्त करे - इसी आशय से.....

A Humble Request to Parents

The mentality of today's children has been ruined by various electrical inventions. The present day generation wastes their time in Movies, Internet, Video games, Facebook etc. These inventions have ruined both the physical and mental health of children.

Majority of the homes in India have been terrorized by the attacks of T.V., internet and video games while doing any work during day time, the concentration is on T.V. programmes.

With an excuse of increasing their children's general knowledge, all the parents run after T.V. connections. But instead of an increase in G.K., there is a degradation and decrease in ethics and morality of a child's character. T.V. has done more harm in destroying a child's character than the Muslim and the British invasions in India.

Morality has gone down, school studies have been affected, religious schools have started closing, children have become violent, rude and impatient. A heavy, and a negative influence of movies is observed in the talking, eating and other behaviour of children. Today it is difficult to see any kind of religious belief or thinking and simplicity in children's behaviour or thoughts.

The following ten years show a dark and gloomy picture of future. A day will come when the son and daughter-in-law would be in hill station and the old parents would be in an old age home, enjoying its pure and fresh air.

To save your children from such unethical and immoral lifestyle, a programme called "Jainism with Art" has been started where "ethics with the help of art" would be taught with the help of 4 series, what difference you can observe in your child and how have these 1 to 4 series helped your child, inform our publication house with your encouraging letters.

मे हंमेशा अकेला हुं

मैं अर्थात् आत्मा
मैं अर्थात् शरीर नही
मैं अर्थात् श्रीमंत नही
मैं अर्थात् गरीब नही
मैं अर्थात् मोटा नही
मैं अर्थात् दुबला नही
मैं अर्थात् रुपवान नही
मैं अर्थात् काला नही

मैं सिर्फ एक आत्मा हुँ
मैं अकेला ही हुँ
मैं ने अकेले ही जन्म लिया हैं
मैं अकेले ही मरुंगा ।

मुझे मेरी आत्मा का हित करना चाहिए
मुझे मेरी आत्मा का कल्याण करना है ।

मुझे स्वयं के लिए पाप नही करना
मुझे दुसरो के लिए भी पाप नही करना चाहिए ।
मैं चाहे किसी के लिए भी पाप करुं
पर उसका बुरा फल तो मुझे ही सहन करना पड़ेगा ।

मैं अकेला असहाय हुँ
तो भी घबराता नही हुँ
मैं अनंत शक्तिमान हुँ
परम सुख का अधिकारी हुँ ।

I...am All Alone !!

I am the Soul.
I am not Body.
I am not Rich.
I am not Poor.
I am not Fat.
I am not Thin.
I am not Good looking.
I am not ugly.

I am the Soul.
I am all Alone
I was born Alone
I will die Alone

I should do good for my Soul.
I should do well for my Soul.

I should not commit sins for myself.
I should not commit sins for others.

No matter for whom I commit sins.
It is only I, who have to bear their fruits.
I am all Alone still, I am not afraid.
I am all Powerful.
I will attain the Ultimate Happiness

प्रामाणिकता

महेन्द्रपुर नाम का नगर था । वहाँ का राजा बेहद प्रजावत्सल और धर्मप्रेमी था । वहाँ की प्रजा भी अत्यंत सरल स्वभाव वाली थी । लोगो का जीवन सुखमय पसार होता था । पर नगर के आखरी कोने मे एक झोपड़ी थी, जिसमे एक गरीब लकड़हारा रहता था । जगत मे नियम है की जो धर्म साधना करता है वह सुखी होता है और जो नही करता है वो दुःखी होता है । इसने भी गत भव मे आराधना की पूंजी संचय नही की थी, जिससे इस भव मे दुःखी था । परन्तु पेट भरने के लिए मजदुरी तो करनी पड़ती है ।

उसके पास एक कुल्हाड़ी थी । उसी से जंगल मे से लकड़ीया काट कर लाता और खुद का गुजारा चलाता । एक दिन ये जंगल मे जलाशय के किनारे पर रहे हुए एक वृक्ष पर बैठकर लकड़ी काट रहा था । उसी समय उसके हाथ मे से कुल्हाड़ी उछलकर सरोवर मे गिर गई । पानी खुब गहरा था, सरोवर के अन्दर जाकर कुल्हाड़ी निकालना नामुनकीन था ।

उस बेचारे के पास सिर्फ एक कुल्हाड़ी थी जिसके सहारे जी रहा था । वो भी पानी मे गिर पड़ी । अब तो जीना मुश्किल हो गया । कुल्हाड़ी के खोने से हताश होकर वह सरोवर के किनारे पर बैठकर जोर-जोर से रोने लगा । जलाशिय के जलदेवता ने उस गरीब लकड़हारे की रोने की आवाज सुनी ! उन्हे उसकी दया आई । उसके पास आ कर पुछने लगे, भाई ? तु क्यों रोता है ।

लकड़हारे ने कुल्हाड़ी गुम होने की बात कही तो जलदेवता बोले ! इसके लिए रोता क्यो है ? मे अभी तेरी कुल्हाड़ी लेकर आता हुँ । इस सरोवर मे बहुत सी कुल्हाड़ीया पड़ी है, तु तेरी ले लेना । लकड़हारा तो खुश हो गया ।

जलदेवता जल मे जाकर तत्काल एक सोने की कुल्हाड़ी ले आए औ पुछा, भाई ये कुल्हाड़ी तेरी ही हे न । लकड़हारे ने कहाँ ! नही देव ये मेरी नही है ।

जलदेवता दुसरी बार जल मे जा कर दुसरी कुल्हाड़ी लेकर आए । वो चांदी की थी । उसे देखकर वो बोला ! भगवान ! ये भी मेरी कुल्हाड़ी नही है । जलदेवता फिर से जलाशय मे गए और लकड़हारे की असली लोहे की कुल्हाड़ी ले आए । उसे देखकर वो फौरन बोला ! प्रभु ये ही मेरी कुल्हाड़ी है ।

जल देवता लकड़हारे की इमानदारी देख कर, अत्यंत प्रसन्न हो गए । उन्होने उसे असली कुल्हाड़ी के साथ साथ सोने और चांदी की कुल्हाड़ीया भी ईनाम मे दे दी ।

सत्य की शक्ति के आगे देवो को भी झुकना पड़ता है । जहाँ प्रमाणिकता है वहाँ सफलता है ।

लकड़हारे के पडोसी को इस बात का पता चला । उसने सोचा मे भी इसके जेसे सोने - चांदी की कुल्हाड़ीया क्यो न हासिल करुं । वो भी अगले दिन उसी जलाशय के पास मे रहे वृक्ष पर चढ़ा । लकड़ी काटने का दिखावा करके अंततः कुहाड़ी जलाशय मे फेंक दि । बाद मे किनारे पर बैठकर ऊँची आवाज मे रोने लगा ।

जलदेवता रोने की आवाज सुनकर उसके पास आए । रोने का कारण पुछा । लकड़हारा बोला ! मेरी कुहाड़ी जलाशय मे गिर गई है, उसके उपर मेरी आजीविका थी ।

जलदेवता बोले, भाई मे अभी तेरी कुल्हाड़ी लाता हुँ । यु कहकर जलाशय मे से एक सोने की कुल्हाड़ी ले आये और पुछा ये तेरी कुल्हाड़ी है ? वो धीरज छोड़कर जलदेवता के हाथ से कुल्हाड़ी छीनने लगा । तभी जलदेवता ने उसे दुर हटा कर कहाँ, मुर्ख । लकड़हारो को सोने की कुल्हाड़ी से लकड़ी काट ते कभी सुना है ? तु यहाँ से चलाजा । दुसरी कुल्हाड़ी खरीदकर मेहनत से कमाने की नीयत रखना, नही तो भुखे मरेगा । जलदेवता चले गए ।

लकड़हारे ने सोने की कुल्हाड़ी के लोभ मे खुद की लोहे की कुल्हाड़ी को भी गुमा दिया। जो व्यक्ति असत्य बोलता है वो जीवन में अवश्य दुःखी होता है ।

प्यारे बच्चो : (१) जो व्यक्ति जीवन मे ईमानदारी रखता है वही सुखी होता है । बेईमान हमेशा दुःखी होता है । (२) ईमानदार मनुष्य पर ही देव प्रसन्न होते है ।

1. प्रामाणिकता / **Honesty**

Honestly

There was a city called Mahendrapur. It's king was very kind and loved the people of his kingdom very much. The people of that kingdom were also very nice and gentle. The people of that kingdom were well off and happy. But at the outskirts of the city, there was a small hut that belonged of a wood - cutter. There is a role of this world. Only that person can be happy who does Aradhana of Dharma and one has not done Aradhana in his last Bhava will be unhappy in this Bhava also. This wood-cutter worked very hard to earn money. He had an axe. With that axe, he cut the wood from the forest and sell them. Thus, he earned his livelihood.

One day, he was cutting a wood sitting on a tree that was on the bank of a pond. While cutting, his axe fell into the pond. The pond was very deep. So it was difficult to take out the axe.

Poor woodcutter. He only had one axe with which he earned some money. Now that was also gone. The wood cutter became very sad and started welling loudly on the bank of the pond. His cries were heard by the Jal devta living in that pond. He had pity on the poor woodcutter. He went to the woodcutter and asked him. "Why are you crying ?"

The woodcutter told how he lost his axe. So Jal devta said "Arey what is there to cry in this ? I will just bring one axe for you. Thre are many in this pond." He went into the pond and brought a golden axe, and asked the wood cutter, " Is this your axe ?". The wood cutter said, "No Jal devta, this axe is not mine".

Jal devta again went under the water and brought out a silver axe seeing it, the wood cutter replied, "This is also not my axe.".

Jal devta went into the water and brought out an iron axe. He showed it to the woodcutter and the woodcutter immediately said, "Yes, this is my axe."

Jal devta was very happy with the honesty of the woodcutter and gifted him the golden and the silver axe.

Even the gods respect honesty success always follows Honesty.

The woodcutter's neighbour came to know about this incident. He thought, "Why shouldn't I also obtain such golden and silver axe?". Next day, he also went to that pond and climbed the nearby tree and started cuttingwood; then knowingly he made his axe fall into the pond. Then he sat on the bank of the pond and started crying loudly.

Hearing his cries, Jal devta came up and asked the reason for his crying. The woodcutter said, that his axe had fallen down into the pond. Jal devta consoled him and said "I will just get your axe" and went under the water. He brought out a golden axe and asked the woodcutter. "Is this your axe?". The greedy woodcutter got impatient and said Yes, Yes, this is mine."

Jal devta pushed him away and said "You fool, have you ever seen any woodcutter cutting wood with a golden axe ? Go away from here. Buy a new axe and work honestly otherwise you will never be happy."

The greedy woodcutter lost his iron axe also in his greed of obtaining a golden axe.

A person who is greedy, dishonest and lies, never becomes happy.

Dear children, always remember : (1) Only an honest person remains happy. (2) Gods are pleased only with honest and hard working people.

वैभवशाली - शालीभद्र

शालिभद्र केनाम से तो सभी वाकिफ (परिचित) है । अति पुण्यशाली व्यक्तिओ को धन कमान नही पड़ता है । पुण्य के प्रभाव से संपत्ति-वैभव तो उनके कदमो मे झुक कर सलाम करते है । शालिभद्र एसे ही प्रकृष्ट पुण्यशाली थे । उनका जन्म राजगृही नगरी मे गोभद्र सेठ व भद्रा सेठानी के घर पर हुआ था । गोभद्र सेठराजगृही के क्रोड़ाधिपतियो मे अग्रणी थे ।

जब शालिभद्र माता की कुक्षी मे आए तब भद्रा माता ने सुन्दर शालि (चावल) से भरपुर खेत स्वप्न मे देखा। स्वप्न देखने से भद्रा माता की प्रसन्नता दुगुनी हो गई । पुत्र जन्म के समय स्वप्न के अनुसार सेठ ने उसका "शालिभद्र" नाम रखा । शालीभद्र ने जब यौवन वय मे प्रवेश किया तब माता-पिता ने ३२ कन्याओ के साथ उनका विवाह करवाया । कन्याए भी बेहद खुबसुरत - गुणवान व संस्कारी थी । अपने पति (शालिभद्र) के वचनो का तुरंत ही पालन करती कभी अवगणना नही करती । गोभद्र सेठने सुख-समुद्धि से भरपुर घर की बागडोर पुत्र के हाथो मे थमा कर दीक्षा ग्रहण की । कुछ ही दिनो मे संयम की सुन्दर आराधना करते हुए, काल कर के महर्धिक देव बने ।

शालिभद्र के पुण्योदय से व गोभद्र सेठ को पुत्र के प्रति रागभाव के कारण से विचार आया की - धन - वैभव तो घर मे अपार है, पर मेरे पुत्र शालिभद्र को मानव जीवन में देवीय सुख का आस्वादन क्यो न करवाउ ? इस विचार के फलस्वरुप - गोभद्र देव - देवलोक मे से भोगसुख की सामग्री भेजने लगे । १ शालिभद और ३२ उनकी पत्नीया इस तरह ३३ व्यक्तियो के लिए प्रतिदिन ३-३ प्रकार की पेटी भेजते थे । १ पेटी मे सुन्दर मखमल के वस्त्र, १ पेटी मे सुवर्ण व रत्नमय दैवी आभूषण और १ पेटी मे अमृतरस जैसी मधुर व स्वादिष्ट भोजन सामग्री । इस प्रकार ३३ व्यक्ति के लिए ३-३ गिनते ९९ पेटी देवलोक मे से भेजते थे ।

शालिभद्र और उनकी ३२ पत्नीया इस सामग्री का इस्तेमाल करते । आज के वस्त्र कल नही । आज के गहने कल नही । रोज नए वस्त्र, रोज नए गहने, रोज नया भोजन । एसा वैभवी जीवन था शालिभद्र का । उपयोग किये हुए आभूषण और वस्त्र डालने के लिए २ कुवे रखे । जो भी उतरा हुआ, वो सब उसमे डाल दिया जाता । गोभद्र सेठ ९९ पेटी भेजते थे, उसका रहस्य शास्त्रो मे अंकित किया हुआ है ।

राजस्थान के जयपुर नगर मे धनदत्त नाम का श्रावक था । वो व्यापारी था । वहाँ से ५० - ६० माइल दुर एक छोटे गाँव मे तेजपाल नामक श्रावक खेती वाड़ी करता था । दोनो को व्यापारी संबंधथा । एक बार तेजपाल को यात्रा करने का भाव हुआ । जिससे वह परिवार के साथ सिद्धाचल, गिरनार, आबु, सम्मेतशिखर की यात्रा करने निकले । बीच मे रास्ता भूल जाने की वजह से साथ की रकम खर्च हो गई । समेतशिखर जाते हुए रास्ते मे जयपुर आया । धनदत्त श्रावक को यात्रा के समाचार मिले । तेजपाल को परिवार सहित घर बुलाकर भक्ति कि, बहुमानपूर्वक भोजन करवाया और तेजपाल को पैसे की जरुरत होने से, धनदत्त से ११५३५ सोनामहोर खुद के नाम से लिखवाकर लि तथा शिखर जी तरफ प्रयाण किया । मार्ग मे ही तेजपाल की मृत्यु हो गई । तीर्थयात्रा के शुभभाव से मरकर गोभद्र सेठ बना । किसी अशुभ कर्म के वश से धनदत्त संगम बना । परन्तु पूर्वभव के संस्कार से सुपात्र दान देते समय भावोल्लास प्रगट हुआ और शालिभद्र बना ।

किया हुआ धर्म कभी निष्फल नही होता तथा निमित्त के मिलते ही संस्कार प्रगट होते है । गोभद्र देव के भव मे ९९ पेटी भेजकर तेजपाल के भव मे लिए हुए कर्ज से मुक्त बनते है ।

प्यारे बच्चो ! (१) पुण्य का बेलेंस होगा तो मेहनत बिना भी धन-संपत्ति-वैभव खुद-ब-खुद मिल जाएगा । (२) किसी के पैसे लेने बाद जो वापिस नही दिये, तो आने वाले भवो मे अवश्य चुकाने पड़ेंगे ।

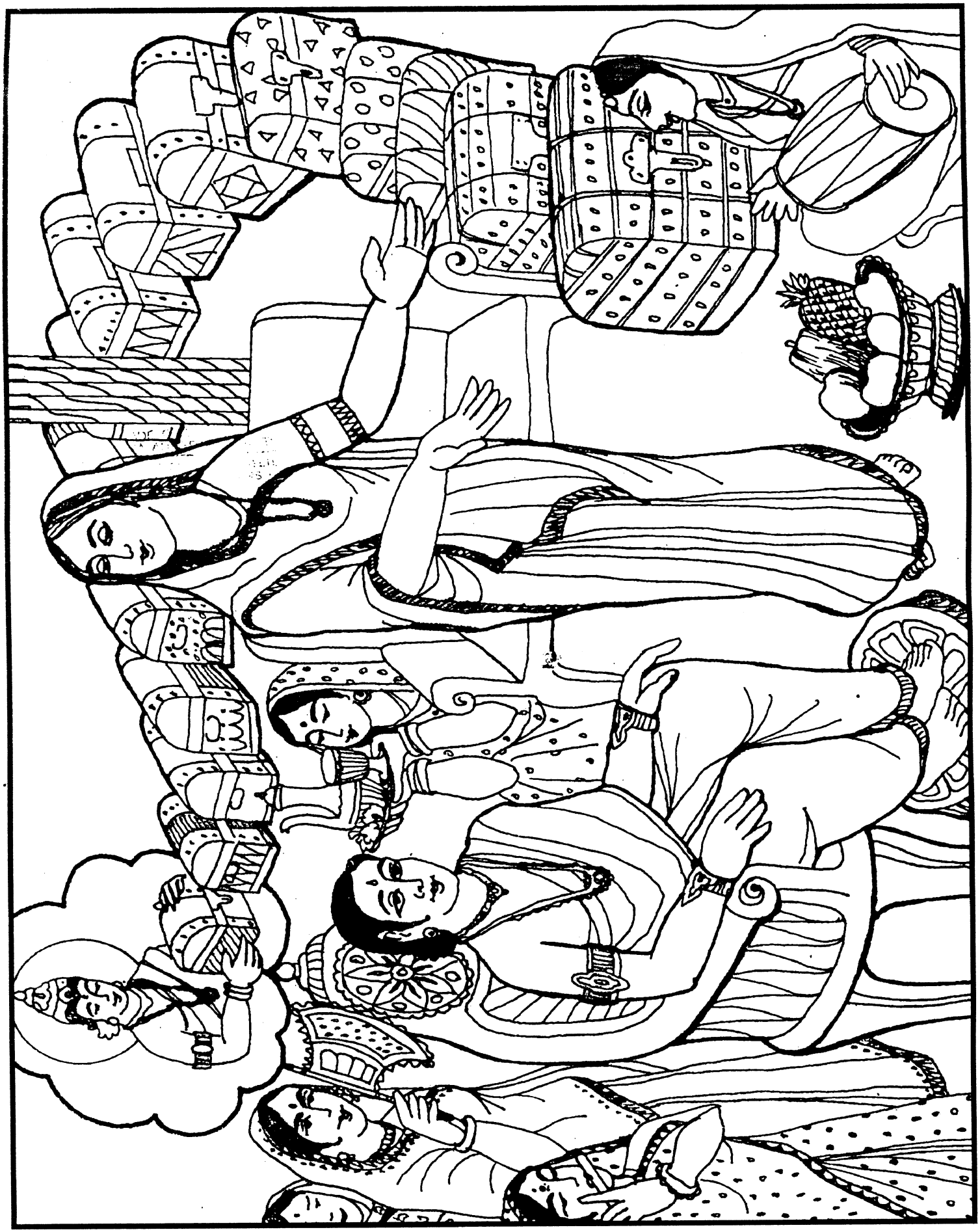

2. वैभवशाली - शालीभद्र / **The Luxurious Life of Shalibhadra**

The Luxurious Life of Shalibhadra

Everyone must have heard Shalibhadra's name. A person who has done lots of good deeds and karmas does not have to earn money. He gets all the wealth and luxuries due to his shubh karmas. Shalibhadra was one of such people. He was born in Rajgruhi. His parents were Gobhadra Sheth and Bhadra Shethani. Gobhadra Sheth was the millionaire of Rajgruhi.

When Shalibhadra was in his mother's stomach Bhadra mata saw a dream. There was a field full of Shali (a kind of rice). Seeing this dream, Bhadramata was very happy. When she gave birth to a son, she named her son 'Shalibhadra' as she had seen the field of 'Shali' in her dream.

When Shalibhadra attained adulthood, he was married to thirty two brides. All his wives were beautiful, gentle and sanskari. They obeyed to whatever Shalibhadra said. They never went against him.

Gobhadra Sheth gave all his wealth to Shalibhadra and took Diksha. After some days he died and became glourious dev.

Gobhadra Sheth, who became Mahardhi dev, still loved his on Shalibhadra very much. Due to this love, he thought of providing Shalibhadra all those luxuries that were enjoyed in heaven.

So, Mahardhi dev started sending all the luxuries from heaven. He sent things for Shalibhadra and his 32 wives, in all, for 33 persons everyday. For each person, he sent 3 boxes. One box contained all the golden jewellery, second box contained the heavenly sweets and the third box contained all beautiful clothes made from soft linen. Thus for 33 persons, 99 boxes were sent everyday from heaven to Shalibhadra's house.

Shalibhadra and his wives made use of all these heavenly gifts, clothes and jewellery worn once were not used again. Everyday new clothes, new jewellery and different varieties of food sent from heaven. All the old clothes and jewellery were thrown into two wells. Such was the wealthy and luxuries life enjoyed by Shalibhadra.

Why did Mahadhidev sent 99 boxes to Shalibhadra ? This secret has been revealed in our holy books.

Long ago, there was a Shravak named Dhandutta who lived in Jaipur, Rajasthan. He was a businessman. 5 - 6 miles away from Jaipur, there was a small village. A Shravak named Tejpal lived there. He was a farmer. Both, Dhandutta and Tejpal, has business relations. One day, Tejpal decided to go for a pilgrimmage (Yatra). He and his family decided to go to Siddhachal, Girnar, Abu, and Sammetshikhar.

But they lost their way. All the money Tejpal had got, was spent while going to Sammetshikhar, Jaipur came on the way. Dhandutta Shravak came to know about Tejpal's Yatra. He invited Tejpal and his family to his home and asked them to stay for dinner. Dhandutta also offered gifts to Tejpal's family.

As Tejpal had no money, he borrowed 11,535 gold coins from Dhandutta and went towards Shikharji. On the way, Tejpal died. As Tejpal had died while his way on Tirthayatra, he was born as Gobhadra Sheth. Dhandutta had antrayakarma, but as he had offered food to a Sadhu in his purvabhava, he became Shalibhadra in his next bhava.

Good deeds never go waste and Sansakar as come into our life whenever they get a chance.

Tejpal, who was indebted to Dhandutta, repays his debt in the form of Mahardhi dev by sending 99 boxes to Shalibhadra everyday.

Dear children, always remember : (1) If you have done good deeds and Shubhkarma, you will get wealth on its own. (2) If you have taken money from someone and not repayed them. You have to repay them in any of your following bhavas.

तत्त्व जानकर जैन बने

(१) २० तीर्थंकरो का निर्वाण किस भूमि पर हुआ ?

(अ) सम्मेत शिखर (ब) सिद्धाचल (क) गिरनार (ड) चंपापुरी

(२) जोडाक्षर रहित एक सूत्र कौनसा ?

(अ) नवकार मंत्र (ब) संसारदावा (क) लोगस्स (ड) कल्लाणकंद

(३) कौन से अनुष्ठान मे "श्रावक को साधु" समान कँहा गया है ?

(अ) पूजा मे (ब) विहार मे (क) सामायिक मे (ड) आयंबिल मे

(४) मयणा - श्रीपाल ने किसकी आराधना कि थी ?

(अ) संतिकरं (ब) नवपद (क) ऋषिमंडल (ड) वीशस्थानक तप

(५) सिद्धाचल पर सर्वाधिक प्राचिन वृक्ष कौनसा है ?

(अ) अशोक वृक्ष (ब) रायण वृक्ष (क) चंदन वृक्ष (ड) वड वृक्ष

(६) ऋषभदेव भगवान को कितने दिन तक आहार नही मिला ?

(अ) ३०० दिन (ब) ३६५ दिन (क) ४०० दिन (ड) ५०० दिन

(७) महावीर स्वामी भगवान के साधुओ मे श्रेष्ठ तपस्वी कोण ?

(अ) धन्नो काकंदी (ब) शालिभद्र (क) गौतम स्वामीजी (ड) मेतारज मुनि

(८) जिनप्रतिमा को देखकर महात्मा कौन बने ?

(अ) अभयकुमार (ब) ढंढणकुमार (क) आर्द्रकुमार (ड) धन्यकुमार

(९) वीरप्रभु के प्रथम साध्वीजी कौन थे ?

(अ) चंदनबाला साध्वी (ब) मृगावती साध्वी (क) यक्षा साध्वी (ड) पद्मश्री साध्वी

(१०) हीरसूरि म.सा. ने कौन से राजा को प्रतिबोध दिया था ?

(अ) कुमारपाल राजा (ब) संप्रति राजा (क) अकबर राजा (ड) श्रेणिक राजा

(११) साधु को दान देने के बाद अशुभ कर्म किसने बांधा ?

(अ) शालिभद्र का पूर्वभव (ब) मम्मण सेठका पूर्वभव (क) आनंद श्रावक का पूर्वभव (ड) कार्तिक सेठका पूर्वभव

(१२) दो प्रतिक्रमण के सूत्रो मे कौनसा सूत्र १९ गाथा का है ?

(अ) लघुशांति (ब) भरहेसर (क) सकलतीर्थ (ड) वंदितु

तत्त्व जानकर जैन बने (तीसरे अंक के जवाब) :

(१) ब (२) क (३) अ (४) ड (५) ब (६) ड (७) ब (८) क (९) अ (१०) ब (११) ब (१२) क

Known elements to become Jain

1. **At which place 20 Tirthankaras attained Nirvana ?**

   (A) Sammetshikhar (B) Siddhachal (C) Girnar (D) Champapuri

2. **Which Sutra does not have any cluster sounds ?**

   (A) Navkar (B) Sansardava (C) Loggasa (D) Kallankandam

3. **What kind of Shravak can be compared to a Sadhu ?**

   (A) In doing Puja (B) In doing Vihar (C) While doing Samayik (D) While doing Aayambil

4. **Which Aaradhana was done by Mayanaa - Shripal ?**

   (A) Santikaram (B) Navpad (C) Rushimandal (D) Vishsthanak

5. **Name the ancient tree on Siddhachal ?**

   (A) Ashokvruksh (B) Rayanvruksh (C) Chandan Vruksh (D) Vad Vruksh

6. **For how many days Rushabhdev did not eat ?**

   (A) 300 Days (B) 365 Days (C) 400 Days (D) 500 Days

7. **Who was the greatest among all the Sadhus of Mahaveer Swami ?**

   (A) Dhannakakandi (B) Shalibhadra (C) Gautam Swami (D) Metaraj Muni

8. **Who became Mahatma seeing a Jeen Pratima ?**

   (A) Abhaykumar (B) Dhandhankumar (C) Aalikumar (D) Dhanyakumar

9. **Who was the first Sadhvibhagwant of Veer Prabhu ?**

   (A) Chandanbala Sadhvi (B) Mrugavati Sadhvi (C) Yaksha Sadhvi (D) Padmashri Sadhvi

10. **Heersuri Maharajsaheb gave Pratibodh to which King ?**

    (A) Kumarpal (B) Sampratiraja (C) Akbar (D) Shrenik Maharaja

11. **After offering food to a Sadhu Maharaj, who commited a sin ?**

    (A) Shalibhadra's last bhav (B) Mammansheth's last bhav

    (C) Anand Shravak's last bhav (D) Kartik Sheth's last bhav

12. **While doing 2 Pratikramanas, which sutra has 19 Gaathas ?**

    (A) Laghushanti (B) Bharhesar (C) Sakalatirth (D) Vandittu

KNOW ELEMENTS TO BECOME JAIN - EDITION 3RD ANSWER

Answer : (1) B (2) C (3) A (4) D (5) B (6) D (7) B (8) C (9) A (10) B (11) B (12) C

एकता का प्रतिफल

सत्यपुर नाम का एक नगर था । वहाँ का राजा धर्मवान और विनयवान था । उसके नगर मे प्रजा आनंदपूर्वक जीवन पसार कर रही थी । परन्तु किसानो के समुह मे एक किसान बेहद दुःखी और उदास रहता था । किसी के पुछने पर "कुछ नही" कहकर बात को टाल देता था ।

इस किसान के ५ लड़के थे । वो पांचो ही बलवान और मेहनती थे, लेकिन परस्पर लड़ाई झगड़ा बहुत करते थे । एक दुसरे की थोड़ी सी बात भी सुन नही सकते थे । ये सब देखकर पिता को अपार दुःख होता था । अभी इतना लड़ते है तो आगे क्या करेंगे ? किसान की बस एक ही तमन्ना थी की पाँचो पुत्र घर मे आपसी समझोता कर के चेन से रहे । इस हेतु पिता ने पुत्रो को अनेक प्रकार से समझाने की कोशिश की । परन्तु पिता की हितशिक्षा का पुत्रो पर कोई असर नही हुआ ।

किसान भगवान को याद करने लगा । हे भगवान ! मेरे बेटो को कौन समजाए ? इस आपसी संघर्ष को कब तिलांजली देंगे । इसी वजह से किसान हमेशा दुःखी रहता था । पुत्र स्नेहपूर्वक रहे, इसके लिए कोई रास्ता तो खोजना ही पड़ेगा । आखिरकार भगवान ने विनंती सुनी । एक दिन इसका उपाय मिल गया । उसने अपने पाँचो सुपुत्रो को बुलाकर कहा - सुनो ! इस लकड़ी के गठ्ठर मे से एक भी लकड़ी निकाले बिना, इस गठ्ठर को तुम्हारे मे से कौन तोड़ सकता है । किसान के सभी पुत्रोने एक के बाद एक गठ्ठर हाथ मे पकड़कर तोड़ने की कोशिश की परन्तु कोई भी सफल न हुआ ।

तत्पश्चात् किसान ने कहा, चलो अब इस गठ्ठर को खोल दो । सभी एक एक लकड़ी ले कर तोड़ो । इस प्रंकार से तो सभी ने लकड़ी तोड़ दी । पांचो आश्चर्यचकित हो गए । फिर किसान ने समझाते हुए कहाँ - एक एक लकड़ी आसानी से टुट गई, क्योंकि वो अकेली थी । यदि वो ही लकड़ी गठ्ठर मे बंधजाती है तो टुट नही सकती क्योंकि वो साथ मे है । ठीक इसी तरह से तुम पाँच जो संगठ्ठित हो कर रहोगे तो मजबुत बनोगे, नही तो लड़-झगड़ कर अलग अलग रहोगे तो बनोगे कमजोर । कोई भी बाहर का व्यक्ति आकर तुम्हे ठग लेगा ।

जिस प्रकार तुममे से कोई भी इस गठ्ठर को तोड़ न सका, उसी प्रकार एकचीत बने हुए तुम्हे भी कोई परेशान कर नही सकता । और घर मे भी हमेशा अमन - चैन बना रहेगा । जिस के घर मे शांति होती है उसीके घर मे गुणो का वास होता है । इस प्रकार का सबक प्राप्त कर पुत्र सुधर गए । पिताजी के पैरो मे गिर कर कहने लगे, हम आज के बाद कभी भी कलेश कलह नही करेंगे और स्नेहपूर्वक रहेंगे ।

प्यारे बच्चो ! जिसके घर मे भाई - बहन लड़ते-झगड़ते है, उन्हे दुसरा कोई भी हैरान कर सकता है। परन्तु जो मिल-जुल कर रहता है उसे कोई तकलीफ दे नहीं सकता । सीलिए बच्चो ! घर मे भाई-बहन के साथि हमेशा एकता पूर्क समझ के साथ रहना चाहिए ।

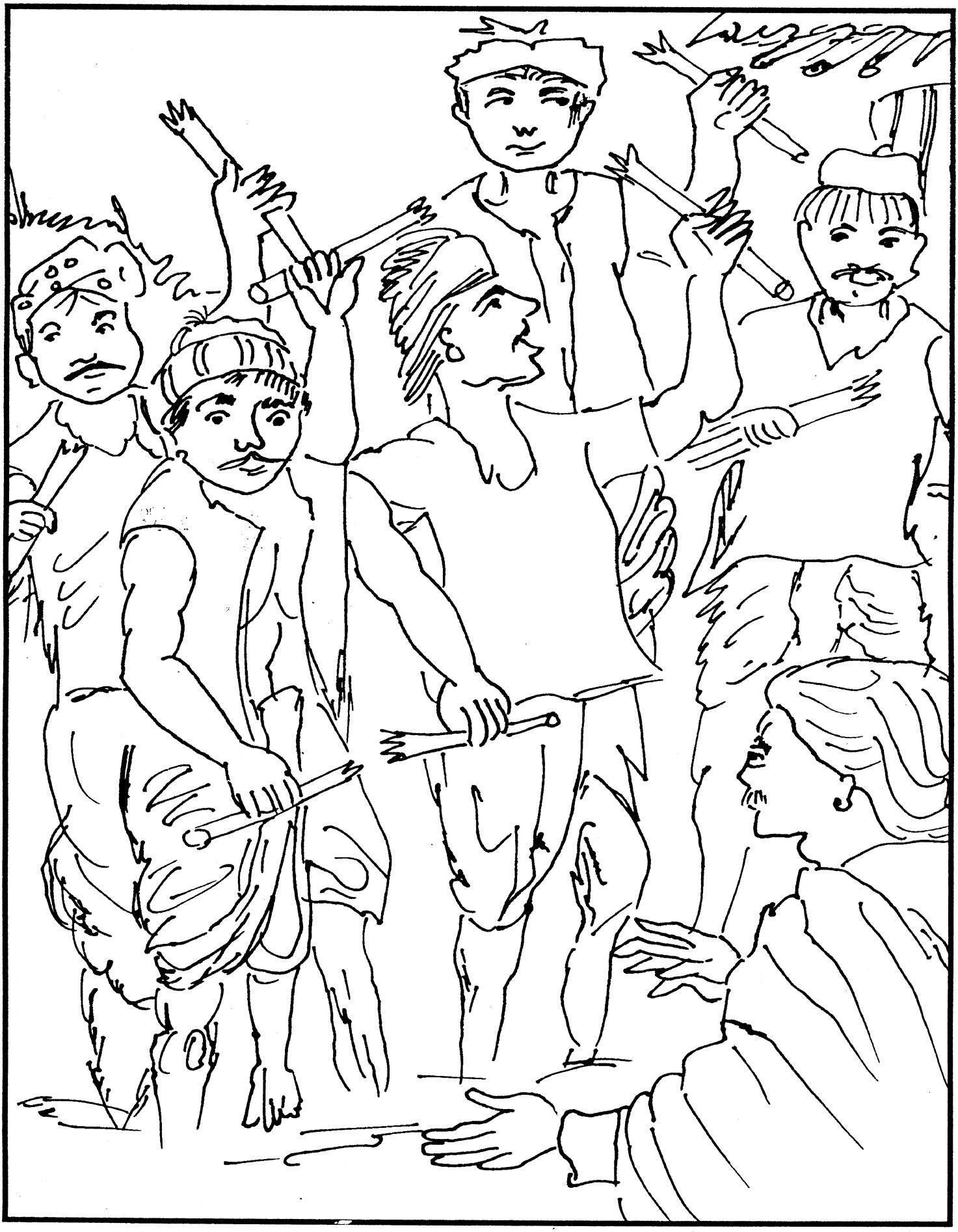

3. एकता का फल / **Fruit of Unity**

Fruit of Unity

One time a city known Satyapur, king of that was very religeous and humble. People of this city lived there with happiness, but in residence of farmers, a farmer was very sad. If somebody asked him about his sadness, just saying "nothing" he used to change the topic.

The farmer had five sons, all were powerful and hardworker but they used to quarrel with each other, nobody were ready to listen anybody's issues. Farmer was so sad, looking all these things. They fighting now, what they will do in future ? Farmer wanted that all sons would live united with peace. Therefore farmer made all son to understand by many examples but his advice did not affect their sons.

Farmer started to call lord, oh lord who will make my son to understand, how to make them to understand. Due to this farmer always remained in worry, something has to think so all sons live united, at last god listened his request. One day he got a remedy. He called in all his son and said listen ! Who is among you able to break up this bundle of woods without taking any single wood piece out.

All son of farmer tried to break up wooden bundle one by one but no one could break bundle up. Then, farmer said let's untie the bundle and break wooden piece one by one, this way they broke-up all pieces, all got surprised.

Then farmer said all wooden pieces broken up easily since they were alone. If wooden pieces are tied, it can not be brokenup, since they are together, this way if you five live together. You will become strong, otherwise if you fight and live alone. You will become weak. Others will put you in quarrelling then you will never become united. If you want to live together then live like bundle, nobody could break bundle, sameway nobody can put you in trouble and peace will stay in your home. "Home having peace in that home good qualities reside in". This way all son understand touched their father's feet and said - we will never quarrel now onwards and live together.

Dear Children : Brothers and Sisters quarrel in anybody's home, they are harrased by the other. If they live united nobody harrase them. Therefore children all brother & sisters should live united.

हाथी की करुणा

राजगृही नगरी के राजा श्रेणीक थे । उनकी धारिणी नामक रानी थी । उन धारिणी रानी का इकलोता पुत्र मेधकुमार प्रकृति से बेहद शांत व सुशील था । माँ की आँखो का तारा था । मेघ का विवाह आठ-आठ बेमिसाल रुपवती कन्याओ के साथ हुआ था । जीवन मे उसने सुख, राजवैभव और स्नेह के अलावा कुछ भी देखा नही था ।

एक बार प्रभु की वाणी सुनकर अन्तर मे वैराग्य भाव प्रकट हुआ। सत्ता, समृद्धि, वैभव सब कुछ व्यर्थ लगने लगा ।

जिन भौतिक सुखो की प्राप्ति के लिए सारी दुनिया दोड़-भाग करती है, उन्ही सुखो के त्याग हेतु तैयार हुए है । ये वैराग्य का ही करिश्मा है की दुनिया को जो पसंद होता है, वैरागी को वही नापसंद होता है ।

पुत्र का वैराग्य देखकर श्रेणिक राजा ने प्रभु महावीर के पास दीक्षा दिलवा दी । मेघकुमार अब मेघमुनि बने । रात्री हुई । साधुओं के संथारे हुए । दीक्षापर्याय मे मेघमुनि सबसे छोटे थे । उन नूतन मुनि का संथारा अंत मे तथा दरवाजे के पास हुआ । रात्री मे लघुनीति के लिए पुरा आते-जाते साधुओ के पैर व डंडासन लगता था । संथारा रेती से भर गया । मेघमुनि को रात भर नींद नही आई । मन बिचारो के घोड़े पर सवार हो गया संकल्प-विकल्प आने लगे ।

मे राजपुत्र था । जो मुनि मुझे आदरपूर्वक बोलाते थे वे ही आज मुझे ठेस लगाते है । चैन से सोने भी नही देते । कहाँ वो फुलो की शैया और कहा ये मिट्टी वाला संथारा ? ये तो मुझसे बर्दास्त नही होगा । कल ही भगवान के पास जाउंगा और ओघा वापिस दे दुंगा ।

सुबह हुई । मेघकुमार ने भगवान के पास जाकर वंदन किया । उनके कुछ बोलने से पहले ही प्रभु वीर बोले, मेघ ! तुझे रात मे नींद नही आई । तुने घर जाने का विचार किया । परन्तु रात्री मे तुने जो सहन किया उससे भी बड़े कष्टो को तुने पूर्वभव मे सहन किया । उसी के प्रभाव से तुझे मनुष्य जन्म व चारित्र मिला है । प्रभु महावीर ने उसे पूर्वभव कहा ।

तु तीसरे भव मे मेरुप्रभ नामक हाथी था । एक बार जंगल मे आग लगने पर तु वहाँ से भागा । पर अचानक नदी के कीचड़ मे फंसाया और मर गया । फिर से हाथी रुप मे जन्म लिया । जंगल मे घुमते तुझे जाति-स्मरण ज्ञान हो गया । दावानल और पशु-पक्षीयो के नाश का तुझे पूर्वभव का ज्ञान था। आग से बचने हेतु तुने एक योजना प्रमाण वृक्षो से रहित एक मांडला बनाया । एकबार दावानल प्रगट हुआ । जंगल मे से तु और छोटे-बड़े सभी पशु-पक्षी वेर विरोधभूलकर मांडले मे आ गए । चारो तरफ अग्नि पैर पसारने लगी पर तेरा मांडला सलामत रहा ।

यकायक पैर मे खुजली होने से तुने पैर उपर किया । जगह कम होने से खाली पड़ी हुई, पैर की जगह पर एक नन्हा सा खरगोरा आ कर बैठ गया । पैर नीचे रखते हुए तेरी नजर खरगोश पर पड़ी । और तिर्यंच के जन्म मे भी तुझे दया आ गई जिससे तुने तेरा पैर अधर ही रखा । आग ढाइ दिन तक रही । पशु भी भुखे-प्यासे,प्राण बचाने खातिर वही रहे ।

आग शांत हुई । सोर पशु चले गए, खरगोश भी गया । बाद मे तुने पैर नीचे रखने का प्रयास किया । पर ढाइ दिन तक अधर लटका हुआ पाँव बंध गया । जमीन पर रख नही सका । कोशिश करते हुए तु जमीन पर गिर गया ।

हे मेघमुनि ! भुखा - प्यासा होते हुए भी, दाय के पुण्य से तुने राजा श्रेणिक के कुल मे जन्म लिया। उस समय तु पशु था, आज तो मानव है । तेरा पुरुषार्थ, पराक्रम, समज-शक्ति अधिक है । हाथी के भव मे अतिशय सहन करने वाला तु, पवित्र मुनियो की चरण-रज से बैचेन हो गया, ये योग्य है ।

प्रभु की वाणी सुनकर मेघमुनि को जाति-स्मरण ज्ञान हो गया । स्वयं का पूर्वभव देखा । संयम मे अतिदृढ बने और आँखो के अलावा शरीर के किसी भी अंग की देखभाल नही करने का नियम लिया । शुद्ध संयम का पालन कर देवलोक मे गये ।

प्यारे बच्चो ! (१) भौतिक सुखो को जीते-जी तिलांजली देंगे, नही तो अन्ततः मरने से पहले तो देनी ही पड़ेगी । (२) धर्म करते हुए मन स्थिर न रहे तो, गुरु भगवंतो को अवश्य सूचित करना । (३) मेघकुमार ने हाथी के भव मे जीवदया का पालन किया तो राजकुमार बने । तुम भी जीवदया पालोगे ना ?

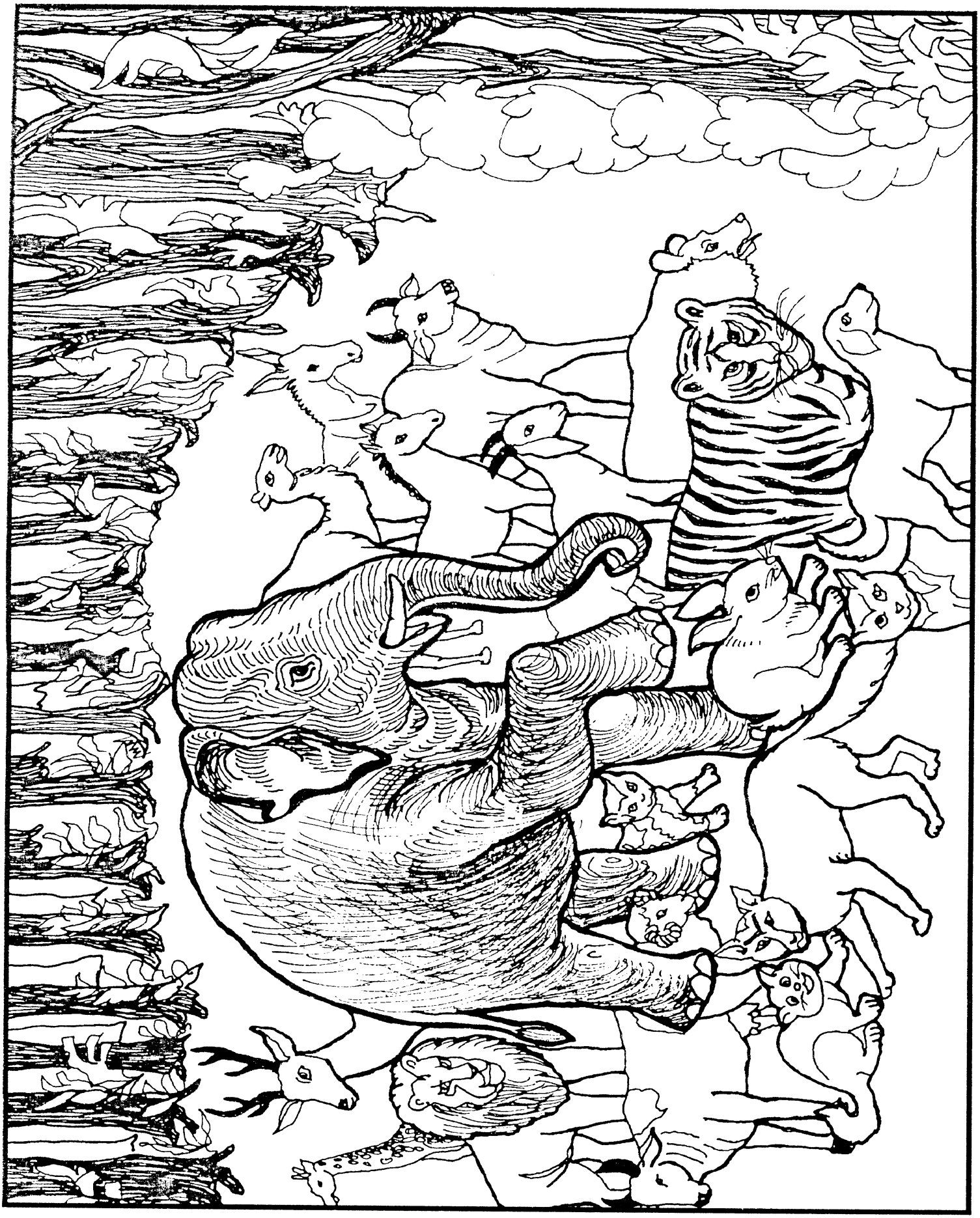

4. हाथी की करुणा / **Meghkumar in the Elephant's Bhav**

Meghkumar in the Elephant's Bhav

Maharaja Shrenik was the king of Rajgruhinagari, he had a Queen named Dharini. They had only one son named Meghkumar who was very calm and Sanskari by nature. Queen Dharini loved his son a lot. Meghkumar was married to princeses. In his life he had not seen anything but only happiness, joy, luxury, love & peace.

Once listening to Bhagvan (Lord) Mahavir's Vaani (Preaching) he had veiragya. He felt as if power, money, this luxurious life is not the only aim in life. Where the entire world is running towards money, power, luxuries, Meghkumar felt like leaving it. This is the Magic of Veiragya. What people likes, Veiragi hates.

Seeing the Vairagya of his son Meghkumar, King Shrenik allowed him to take diksha with Lord Mahavir. Now he became Meghmuni, the youngest Muni of Bhagwan Mahavir. At night all the Munis put their Santhara for sleeping. Being the young Muni, his Santharan was put last & that too, near the door side. At night when he slept, other Muni put their legs and dandasan while going for bathroom. So his Santhara was filled with Mud. For this reason he could not sleep at night, his mind started thinking wrong.

He thought I was a Rajkumar all Sadhu (Muni) used to give me respect & now they are putting legs on my Santhara and not allowing me to sleep peacefully. Where the soft bed of mine and where this muddy Santhara. No no I can't live like this its impossible for me to follow Sayyamjeevan. Tomorrow I will go to Bhagwan Mahavir return my oogo.

Soon in the morning Meghmuni went to Bhagwan Mahavir & took his blessing. Before he could speak, Bhagwan Mahavir said "Megh, you couldnot sleep whole night". For this reason you have decided to leave Sayyam (Diksha) life & go home. But Megh what ever problems you have faced last night is nothing which you have faced in your past bhav, where you have sacrified a lot. And that's the reason you have Manav Bhav and this diksha. Now Bhagwan Mahaveer started telling Megh's Purva Bhav.

Megha in the 1st third bhav you were an elephant named Meruprabh, once in the forest there occured a huge fire, to save your life you ran away from the forest, while running your leg slipped in the river full of garbage & you died.

Again you took birth as an elephant, seeing the forest you had Jatismaran Gyan. You had an idea of forest fire and how the animals & birds died because of fire. For the Prevention of fire and to save other animals life you being an animal digged 1 Yojan big circle (Mandal) with out any trees.

Once there was a fire in the forest all the animals in the forest including you forgot their enemity & come to that Mandal. Fire spreaded in the whole forest except the Mandal.

Suddenly you had itching in the of your legs so you lifted (raised) your leg up, due to shortage of space the rabbit come there seeing the empty space. As you were putting your leg down you saw an rabbit below you had mercy (Daya) and you decided to keep your leg lifted. As the fire lasted for 2½ days all the animals lived in the Mandal hungry and Thirsty.

Once the fire stopped all the animals went back to the forest even the rabbit. So you tried to put your leg down but lifting your leg for 2½ days you were tired and couldn't put your leg down it. You fell and died there.

Bhagwan Mahavir say's listen Meghmuni "hungry and thirsty still having mercy (daya), you did lot of punya and that's the reason you took birth at King Shrenik's place. That time you were animal now you are human where you have more understanding, more capacity to do everything.

When you have sacrified so much in elephant's bhav now this pavitra Muni's Mud is making you to give up diksha. Is it right ??

Listening Bhagwan Mahavir's preaching Meghmuni got Jatismaran Gyan saw his past bhav, became more strong in following his diksha and took a oath that except his eyes he won't take care of any of the bodyparts. Starting following Niratichar.

चित्र बनाकर रंग भरे

Draw the Picture & colour it

प्यारे बच्चो !

तुम्हारे सामने दो अलग अलग चोरस खाने वाले चित्र है जिसमे पहले चित्र में एक भगवान का लांछन बनाया हुआ है । चोरस खानो के आधार पर दूसरे चित्र में भी ऐसा ही लांछन बनाओ और दोनो चित्रो में रंग भरो... हा... प्रश्नो के जवाब देना मत भूलना...

Dear Children,

Before you there is a picture of a Tirthankar's Laanchchan. So similiarly, you also make use of your talent and knowledge and draw a picture.

(१) यह लांछन कौन से भगवान का है.....संभवनाथ.....

(1) This is the Laanchan of which Tirthankar .....

(२) इस भगवान की माता का नाम क्या है.....सेना माता.....

(2) What is the Name of his mother .....

(३) इन भगवान के पिता का नाम.....जीतारी पिता

(3) What is the name of his Father .....

(४) २४ तीर्थंकर में इन भगवान का क्रमांक.....तीसरा.....

(4) What is the number of this Tirthankar .....3.....

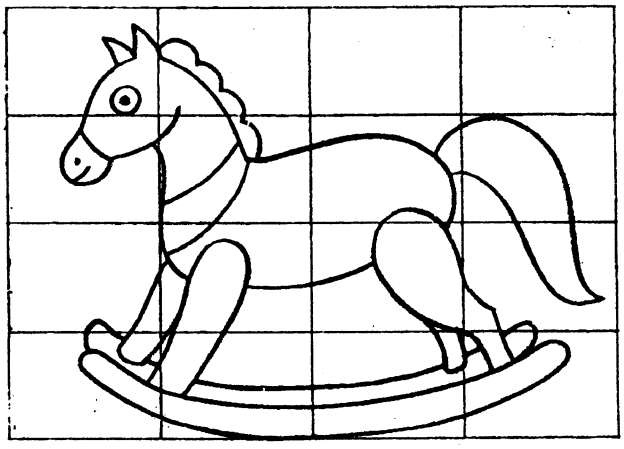

चित्र पहेचानो

Identify the Picture

प्यारे बच्चो !

एक मजेदार चित्र तुम्हारे सामने है । इस चित्र में ११ ग्यारह चित्र छुपे हुए है । इस चित्रो को बुद्धिपूर्वक पहचान कर उनमें मन पसंद रंग भरो.

Dear Children !

There is a picture puzzle before you. Some pictures are hidden in this puzzle. Find them out and colour them. Name and list down the pictures you can find.

1. hen 2. snacke 3. fish 4. Butterful 5. hat

6. elephant 7. Starfish 8. kulladi 9. Moon 10. pencil

11. Boat

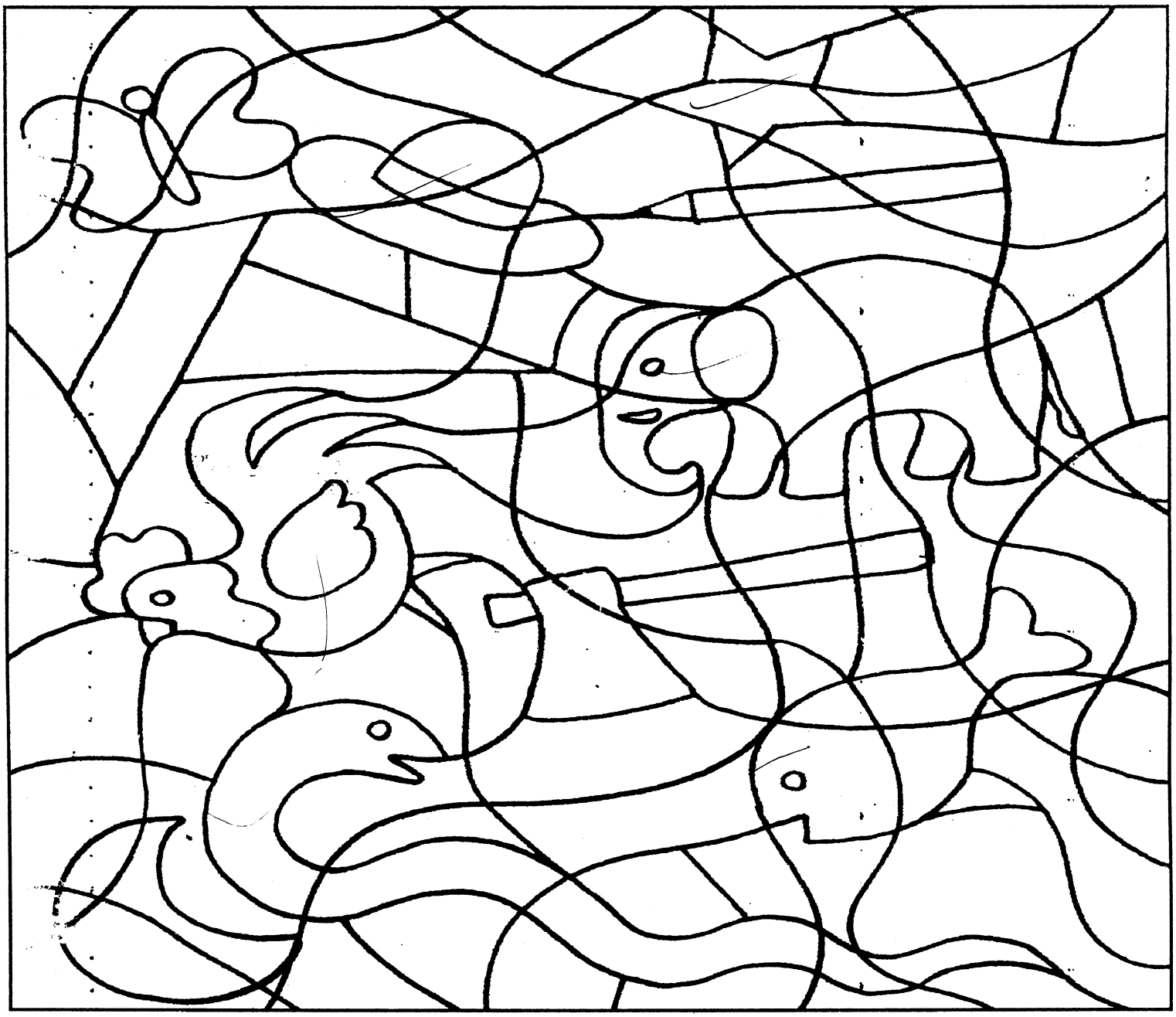

प्रभु के उपसर्गो की शुरुआत

परमात्मा महावीर प्रभुने दीक्षा लेने के बाद साडे बारा साल तक धोर तपस्याए की । सहन करने से ही साधना और सिद्धि मिलेगी, ये संकल्प प्रभु ने किया था । इसलिए अनेक उपसर्गो को सहन किया ।

उन्ही मे सर्वप्रथम मे प्रसंग आता है । दीक्षा के पश्चात् प्रथम दिन प्रभु विहार करके शाम को सूर्यास्त मे २ घडी (४८ मी.) पहले कुमार नामक गाँव मे पहुंचे । रात को वही काउस्साग्गा ध्यान मे स्थिर हो गए । मन की एकाग्रता और क्रम की निर्जरा के लिए काउस्सग्ग एक उत्तम आराधना है ।

प्रभु काउस्साग्गा ध्यान मे खड़े थे तभी एक ग्वाला वहाँ आया । उसने दिन भर बैलो से काम लिया था । उन दोनो बैलो को प्रभु के पास मे छोड़कर गोवाल गाय दुहने के लिए घर गया । बैल तो जंगल मे दुर चले गए । गोवाल गायो को दोहकर वापिस आया तो बैल नजर न आए । उसने सज्जनता पूर्वक प्रभु को पुछा, हे आर्य ! मेरे बैल कहाँ है ? काउसग्ग ध्यान मे रहे प्रभु ने कुछ भी प्रत्युत्तर न दिया । तो उसने सोचा ये बैलो के बारे मे कुछ जानते नही है । फिर गोवाल बैलो की तलाश मे पुरी रात जंगल मे भटका, तो भी बैल न मिले । बैल भी पुरी रात घुम-घुमकर स्वयमेव ही प्रभु के पास आ गए और स्वस्थता पूर्वक जुगाली करते हुए प्रभु के पास बैठ गए । अब वो गोपाल भी भटक कर वहाँ ही आ गया । और बैलो को देखकर विचारने लगा कि, मेरे बैल कहाँ है, इन्हे पता तो था फिर भी मुझे परेशान किया । इस प्रकार गुस्से मे आग-बबुला हो गया । क्रोधावेश मे खुद के पास रही हुई बैल की राश (मोटी रस्सी) उठाकर प्रभु को मारने दोड़ा ।

प्रभु तो ध्यान मे मग्न थे । कौन आया, कौन गया ? गोवाल ने क्या बोला और क्या कर रहा है । प्रभु को तो कुछ ख्याल ही नही था । वो तो अपने आत्म ध्यान मे लीन थे । गोवाल मारने आया है, डोरी उठाई है वो भी प्रभु को मालुम नही था और कभी मालुम होता तो भी सामना तो नही करते । गोवाल को रोकते भी नही । प्रभु तो..... एक ही बात पर दृढ निश्चयी थे कि **"कर्म को तोड़ना है, प्रभुता प्राप्त करनी है, संसार की केद मे से निकल कर सिद्धि स्थान हासिल करना है । हाँ वहाँ जन्म नही, मृत्यु नही, दुःख का नामोनिशान नही, कोई इच्छा नही ।" केवल आत्मा का सुख, सुख ही सुख ।**

लेकिन वो सुख कर्म तोड़ने से आता है । कर्मो को तोड़ने के लिए तप व समता का दामन थामना पड़ता है । प्रभु ने तो उपसर्गो मे भी क्षमा-समता का आचरण किया ।

गोपाल रस्सी लेकर मारने आता है । ठीक उसी समय पर प्रथम देवलोक के इन्द्र को विचार आया कि, प्रभु प्रथम दिन क्या कर रहे है ? और अवधिज्ञान से देखते है । प्रभु को रस्सी से मारने के इरादे से तैयार गोवाल को देखा । तत्काल ही इन्द्र ने उसे वही स्तम्भीत कर दिया । तत्पश्चात जल्दी से वहाँ पहुचकर गोवाल को दुर किया । नासमझी मे ऐसे व्यवहार करने के बदले मे शिक्षा दि । सिद्धार्थ व्यंतर को वहाँ छोड़कर इन्द्र अपने स्थान पर चला गया । प्रभु भी वहाँ से विहार कर गए ।

प्यारे बच्चो ! (१) प्रभु के पास सामना करने की शक्ति थी तो भी सहन किया । आप भी सहन करना सीखो । (२) गोवाल ने मन मे कल्पना की "प्रभु ने बैलो को छुपाकर मुझे सताया" व्यर्थ की मनोकल्पना से उनर्थ होता है । हम भी गलत कल्पना करना छोडे तो जीवन सुधर जाएगा ।

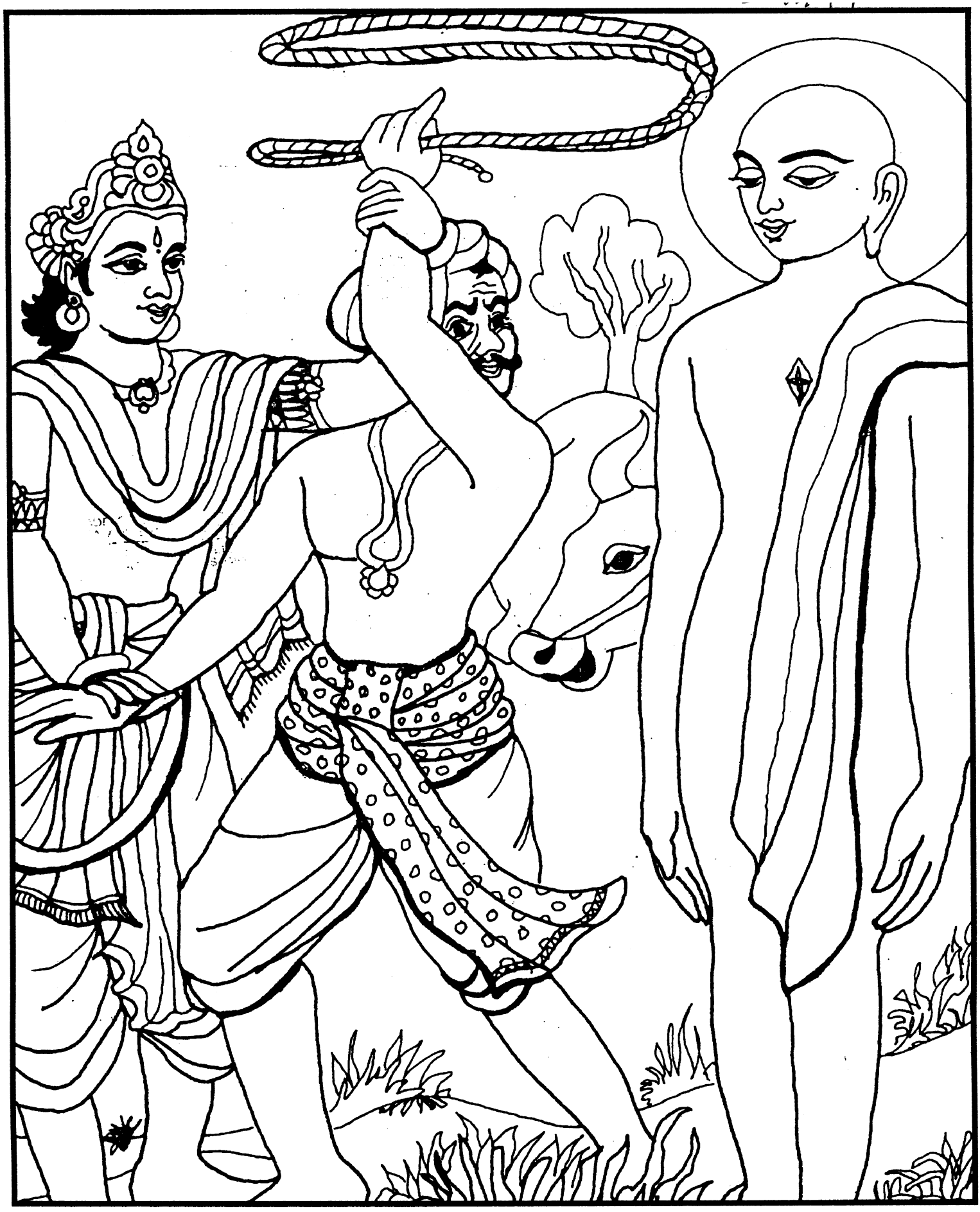

5. प्रभु के उपसर्गो की शुरुआत / **Commencement of harrasment (Upasharga) to lord Mahaveer**

Commencement of harrasment (Upasarga) to lord Mahaveer

After accepting "Deeksha" lord Mahaveer performed severe "Tapa" till 12½ years, lord had firm determination that "Sadhana and Sidhi" obtained only by tolerance therefore lord tolerated many harrasment (Upasharga).

It is very first incidence of that time. After taking "Deeksha", very first day lord reched & minutes before sunset in kumar village by "Vihar" (Travelling on foot) and lord stationed himself in "Kausagga Dhayan" in night. For concentration of "Mana" and elimination of "Karma" Kausagga is the best Aradhana (Worship).

Lord stood up in "Kausagga Dhayan", one Gowal (Person involve in cow milk business) came there in and he had made two oxes to work whole day, he left the oxes beside the lord and went his home to extract milk from cows. Oxes went far away in forest. Gowal came back after extracting milk and he did not see oxes. He asked decently to lord, Oh gentleman ! Where are my two oxes ? Kausagga stationed lord did not utter any word and gowal thought that lord did not know regarding oxes. Then Gowal roamed whole night in forest to search oxes, even then he did not find oxes.

Oxes came near to lord their own after having their food in forest and they sat beside lord with healthy mind. After roaming Gowal came back in morning and seeing the oxes he thought. Oh! he was aware of oxes where about, he made me to roam unnecessarily "he has harrased me by hiding my oxes". In anger he became red face. In anger he ran towards the lord to strike him with thick rope of oxes. Lord is in "Kausagga Dhayan" who has come and gone ?. What Gowal said and what he is doing, lord do not put any attention towards all these things. He is completely immersed in "Dhayan" of soul. Gowal has come to strike, Gowal has raised rope, that also lord don't know, even he had known he would not have opposed him, would not have stopped. Lord understand only one thing breaking up "Karma" getting lordness, getting freedom from prison of the world and obtaining "Moksha". Yes "Moksha" there is no birth, no death, no name of sorrows, no wishes, only pure happiness of soul, just happiness.

But that happiness come after breaking up "Karma" to break "Karma" "Tapa" has to be performed and maintained "Samta" lord did give forgiveness in harrasment and kept "Samta".

Gowal is coming to strike with rope, exactly that time Indra (King of Daity) of first heaven thought. "In first day what god is doing ? to know that he used "Avadhigyan" he watched running gowal, he was ready to strike. Indra immediately stopped Gowal and immediately sent him back and punish him for his behaviour. Indra went back his place after leaving "Sidharth Wantor" there, lord also went away by Vihar.

Dear Children ! (1) Lord had capability to oppose even then lord tolerated, you also learn tolerance. (2) Gowal imagined "Lord has harrased me by hiding oxes". False imangination create meaningless confusion. If we stop false imagination then our life will get improved upon.

इन्द्र से बड़ा बादशाह

अकबर बादशाह के दरबार मे नौ रत्न थे । बीरबल ९ रत्नो मे से एक था । उसकी बुद्धि और हाजिर जवाबी बेमिसाल थी । उसी के बल पर दरबार मे उनका सर्वश्रेष्ठस्थान था । वह राज्य की अजीवो गरीब समस्याओ का हल चुटकियो मे निकाल देते थे । प्रजाजन को न्याय दिल वाता और बादशाह को भी सत्य की प्रस्तुति द्वारा बोधपाठ करवाता । परन्तु स्वयं की बुद्धि का कभी गलत इस्तेमाल नही करता ।

अपनी बुद्धि से किसी को दुःखी न करे, हैरान न करे । दुसरो के संकट मे मददरुप बने वही बुद्धि उपयोगी है।

एक दिन सुबह-सुबह बादशाह और बीरबल बगीचे मे घुमने निकले । घुमते घुमते दोनो इधर-उधर की बाते कर रहे थे । बातो ही बातो मे स्वर्ग के राजा इन्द्र की चर्चा चली । अकबर तो मनमोजी बंदा । कब कौनसा तुक्का सुझे ? कुछ कह नही सकते । कभी तो सभी को आनंद प्रमोद के लिए भी तुक्का चलाए उसीमे किसी की बुद्धि की आजमाइश भी हो जाए । इन्द्र की अकबरने सोचा की ये इन्द्र कैसा होगा । ये बड़ा राजा होगा या छोटा ? बीरबल से पुछा । बीरबल ! इन्द्र देवलोक के राजा है । मे पृथ्वीलोक का राजा हुँ । तो इन्द्र मुझसे बड़ा राजा है या मे इन्द्र से बड़ा राजा हुँ । जो भी हकिकत हो वो ही बोलना ।

बीरबल सोच मे पड़ गया । उसे लगा की यदि इन्द्र को महान कहु तो बादशाह नाराज होंगे और बादशाह को महान कहु तो राजा सबुत मांगेगे । जिससे बिरबल मौन हो गया । तो अकबर बादशाह जिद करने लगे । तु चाहे जो कर पर मुझे तत्काल मेरे सवाल का जवाब दे । बीरबल ने विचार कर तुरन्त ही कहाँ जहाँपना । इन्द्र से भी आप अधिक महान हो । बादशाह मन ही मन मे खुश हो गए । "खुशामत किस को पसंद नही होती" ! **"खुशामत तो खुदा को भी व्यारी है ।"** पर इस प्रकार आसानी से जवाब देकर बीरबल छुट जाए, इससे अकबर को चैन न मिले । बादशाह बोले, बीरबल ! तु मुझे इन्द्र से भी महान कहता है । परन्तु ये मे कैसे मान जांउ ? इसकी साबिती तो दे । बीरबल को तो पता ही था । बादशाह साक्षी तो मांगेगे ही । उसने फटाफट मस्तीभरा जवाब दे दिया । ब्रह्माजी ने जब इस संसार को बनाया तो सर्वप्रथम २ पुतले बनाए । एक आपका और एक इन्द्र का । दोनो मे से बड़ा कौन ?

वो स्वयं इन्द्र भी तय नही कर सके । तो उसने तुम दोनो को एक बड़े से तराजु के एक एक पलड़े मे रखा ।

महाराज ! आप तो मोटे हो तो वजन मे भी भारी थे, जिससे आपका पलड़ा झुक गया । अब इन्द्र तो दुबले, बजन मे भी हल्के, तो उनका पलड़ा उपर हो गया । इसीलीए तो ब्रह्मा ने आपको पृथ्वी का राज्य और इन्द्र को स्वर्ग का राज्य दिया ।

इस तरह से ब्रह्माजी ने तबी निश्चय कर लिया था की आप बड़े हो । बीरबल के जवाब से बादशाह हँस पड़े ।

वाह ! बीरबल वाह ! बुद्धि मे तेरी बराबरी कोई कर नही कर सकता ।

प्यारे बच्चो ! (१)बीरबल की बुद्धि दुसरो का फायदा करती, नुकसान नहीं । तुम्हारी बुद्धि का प्रयोग भी दुसरो की भलाई के लिए करना । (२) कोई भी बात करने से पहले सामने वाला व्यक्ति अगला प्रश्न कौनसा करेगा ये सोच कर ही जवाब देना । (३) बच्चो ! बीरबल जैसे हाजिरजवाबी बनना ।

6. इन्द्र से बड़ा बादशाह / **King Akbar is Bigger than Indra**

King Akbar is Bigger than Indra

Once upon a time there was a king named Akbar. He had a huge palace which had Nine Gems in it. One of the nine gems was Birbal. He was very intellegent with quick answers. He had a very good status in King's palace and Birbal was king's favourite man. He use to solve everyone's problem. Birbal never use to misuse his intellegence and never hurt anyone by his intellegence. Intellegence is the one that can help an one in their bad times.

One morning Akbar and Birbal went for a walk in the garden and was busy in their talks. There, they started talking about heaven's king Indra. King Akbar use to talk anything at anytime and it helped sometimes to test anybody's intellegence. While talking about Indra King Akbar was thinking, How would be this Indra ? He would be a big King or a small King ? He asked Birbal "Birbal Indra is heaven's king and I am the King of this earth, then Is Indra big king then me or I am bigger then him, tell what truth is".

Birbal got confused. He thought if I will say Indra is big king then Akbar will feel bad and If I will say Akbar is big then he will ask for proof. So, Birbal decided to keep quiet and not to speak anything. But king Akbar forced him to give his answer rite now. Birbal replied " My Lord ! you are bigger than Indra ! King got happy. Everyone likes to hear good for ownself. Even God is happy to listen good things for him. But king Akbar was not satisfied just by Birbal's answer King said "Birbal how can I believe you that I am bigger than Indra, Do you have any proof ?

Birbal was so sure that Akbar will ask for proof. So without any hesitation Birbal replied, "when God started creating this world he firstly created two status. One was you and the other was Indra who is the bigger one was not decided even by god himself. That's why, God made you both sit in the Balance scale.

King you were bigger and heavy so your scale went down and as Indra was smaller and less in weight his scale went up. So God made you the King of Earth and Indra the King of Heaven.

"Thus, God decided that you are only bigger than Indra listening to Birbal's answer, King Akbar started laughing and replied", Wow Birbal ! no-one can beat your Intellegence.

Dear Children ! (1) Birbal's intellegence always helped everyone. Use your intellegence to help all not to hurt them. (2) Before talking anythig wait and think what question will the other person ask and give answer accordingly to it. (3) Children, be like Birbal and give quick answers.

अंतर ढूंढो

प्यारे बच्चो !

जगत के तमाम जीव सुखशान्ति के लिए दौडधाम कर रहे है परन्तु शहेर की चकाचौंधजिंदगी में सुखशान्ति गायब हो गई है । सच्ची सुखशान्ति गाँव के जीवन में है इसलिए यहा पर गाँव के दो चित्र दिए है । इस दोनो चित्रो को बनाते समय चित्रकार से ११ भूल हुई है उन भूलो को ढूंढकर दोनो चित्र में अपने मनपसंद रंग भरो और अपने गाँ को याद करो ।

Find Difference

Dear Childrens, there is a picture of a beautiful village. In this world, everyone is busy to find happiness. There is no happiness in the hi-fi life of a city. Real happiness is found only in the life of a village. There are 11 differences between these two pictures of the village. Spot the differences and then colour the pictures.

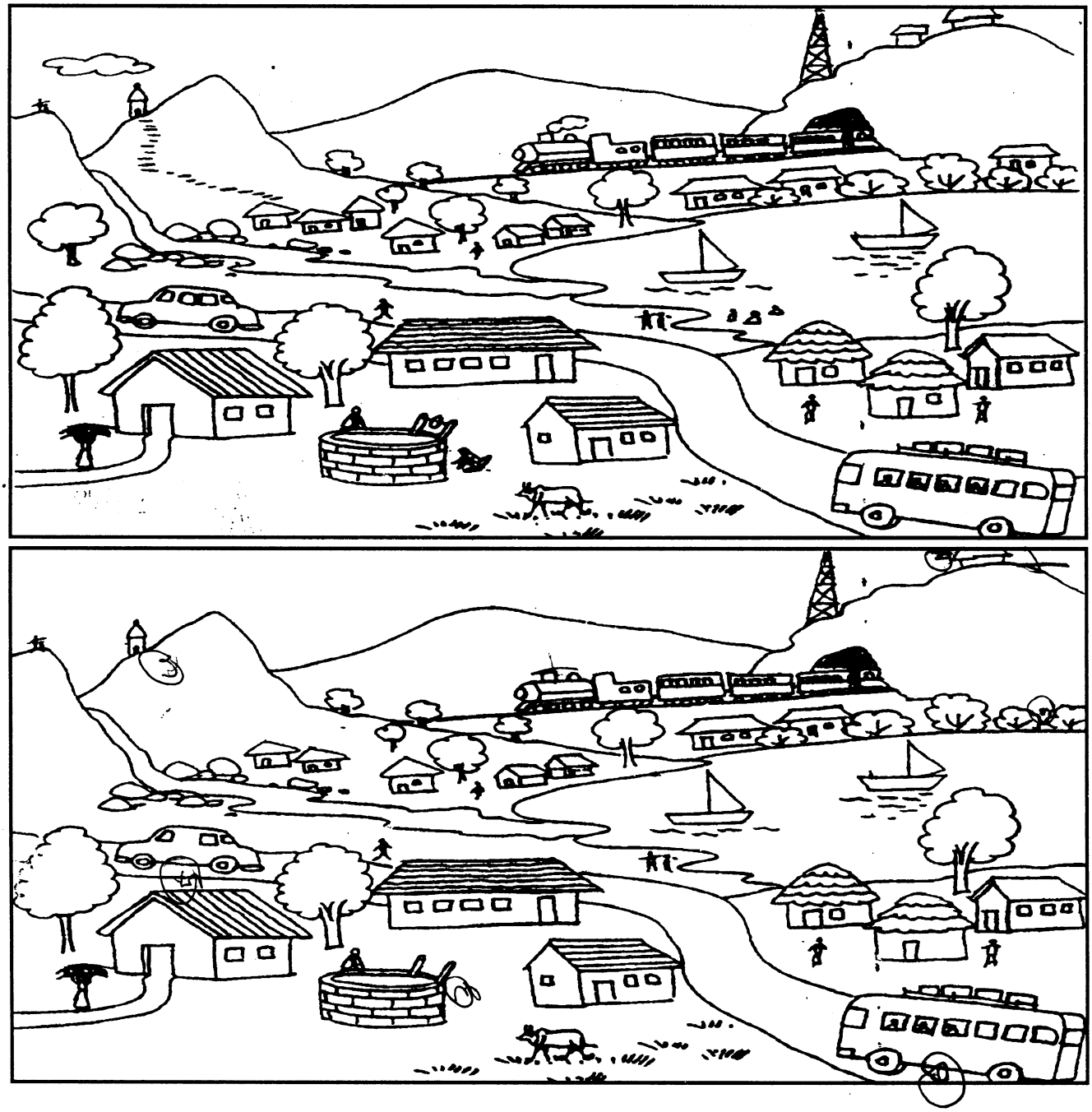

पिज्जा में है गोमांस !

(पैकेट पर लिखा है फिर भी खाने वाले दीवाने)

टाईटल नंबर ४ पे चित्र देखो.

क्या आप पिज्जा खाने के शौकीन है और आपकी पिज्जा खाने की जिद है तो जरा संभलकर इसका चयन करें, क्योंकि इसमें गोमांस की परत होती है । पैकेट पर इस बारे में साफ-साफ लिखा है ।

इतना ही नहीं जिस पैकेट में यह खाद्य सामग्री है उस पर उत्पाद के वेज या नानवेज की पुष्टि करने वाला लोगो तक नहीं है । इन दिनों बच्चे जाने-अनजाने गोमांस का सेवन कर रहे हैं । यह गोमांस उन्हें पिज्जा के मम्मी पेक के जरिए दिया जा रहा है । १५ ग्राम के छोटे से रंग बिरंगे पैकेट में बंद यह पिज्जा हर गली व चौराहे पर बनी दुकानों पर धड़क्के से बेचा जा रहा है । इस पैकेट में पाँच स्लाईस होते हैं जिसमें एक एक परत गोमांस की लगी होती है ।

इस बारे में कंपनी ने अपने उत्पाद पर स्पष्ट शब्दों में लिखा है । उत्पाद को तैयार करने के लिए प्रयोग की गई सामग्री में इसका उल्लेख है । रेपर पर अंग्रेजी में बीफ जिलेटिन शब्द भी लिखा हुआ है । इसका अर्थ है, गोमांस की परत । यह संदेश बेहद महीन शब्दों में छपा है। क्युकि ज्यादातर बच्चे न तो अंग्रेजी जानते हैं और न ही खाने-पीने की चीजों में सावधानी बरतते हैं ।

ऐसे में बच्चे अनजाने में ही गोमांस का सेवन कर रहे हैं । इसकी बिक्री से कंपनी मालामाल हो रही है । नागरिकों द्वारा प्रशासन से इस बारे में उचित कार्यवाही करने की मांग की गई है ।

PIZZA CONTAINS BEEF

(CLEARLY MENTIONED ON PACKET, BUT STILL PEOPLE ARE CRAZY.)

Look all picture in page number - 4

Are you fond of Pizzas and you want to eat, then read this carefully as Pizzas contains Beef (Cow meat), which is clearly mentioned on the packet.

Infact, the packets containing this Pizza does not even have any mark of Veg. or Non Veg. Now a days childrens unknowingly eats beef, which is given to them through "Mummy pack Pizza" small packets of 15 gms are available at every shop in every lane containing 5 slice having beef in each.

In this regard, Company mentions in procedure of producing with the word "Beef Geletine" which means slice of beef. This is printed in very small fonts. An majority of children niethers knows English nor they take due care will eating, they eats beef. Knowingly - unknowingly.

Citizens have demanded proper procedure from the government, against the company, in this matter.

Crackers : Wastage of Time, Health & Wealth

What is a Festival ?

An occassion which enlightens the soul is known as festival.

Whereas, The occassion which makes the soul perform the sins cannot be said as festival.

During the occasions like Diwali, Marraige, Cricket etc people tries to get enjoyment by firing Crackers, but better know the disadvantages for the same :

(1) Crackers are produced by making the plants roots wet. By firing Crackers, its volume, lightening and smell kills the small insects in the atmosphere.

(2) If the lights cracker fall on sand, falls in water, fire itself, and fall in air causes death of Pruthvikay, Aapkay, Agnikay and Vayukay living beings respectively.

(3) The poisonious smoke of Crackers damages lungs and also increases pollution. It causes deafness, spoil throat and may also cause heart attack.

(4) If a active Cracker falls on sack of cotton or dry grass, it may turn into huge fire and can kill many people or may make people homeless.

(5) By firing paper gyanavarniya, by killing insects darshnavarsiya, by harrasing someone Asata vedniya karma, by enjoying it mohaniya karma, gets stack to the soul.

(6) It destroys the qualities of mercy and culture.

I am a Jain, so I take a oath that I will not do this type of sinful activity of firing Crackers and will not support anyone do this.

फटाके : समय, शक्ति और संपत्ति का नाश

त्योहार क्या है ?

जो परिस्थिति आत्मा को जागृत करे उसे त्योहार कहते है ।

जो क्रिया आत्मा को पाप कार्य मे जोडे उसे त्योहार नहीं कहते । दिवाली, लग्न, क्रिकेट जैसे प्रसंगो पर आनंद लेने का प्रयास करने से पहले हम उससे होते नुकसान पर एक नजर डाले ।

(१) फटाके वनस्पति को भिगोकर बनाये जाते है । उसे जलाने से, उसके आवाज से और गंध से छोटे मच्छर आदि जीव नाश होते है ।

(२) जलते फटाके मिट्टी पर गिरने से पृथ्वीकाय, पानी मे गिरने से अपकाय, जलने से अग्निकाय, हवा मे अग्नि लगने से अग्निकाय की हिंसा होती है ।

(३) फटाके के जहरीले धुए से फेफसे बिगडते है तथा प्रदुषण होता है । इससे बहेराश आती है, गला बिगडता है तथा हार्ट अेटेक आने की संभावना बढ़ जाती है ।

(४) अगर जो जलता हुआ फटाका रुई मे गिर जाये या घास के ढेर मे गिर जाये तो बडी आग लग सकती है, जिससे काफी लोगो की जान जा सकती है और काफी बेघर हो सकते है ।

(५) कागज जलाने से ज्ञानावरणीय, जीवो को मारने से दर्शनावरणीय, जीवो को दुःख देने से अशाता वेदनीय, आनंद लेने से मोहनीय कर्म का बंध होता है ।

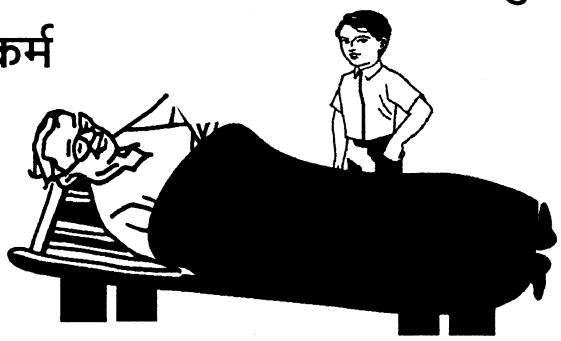

(६) इससे दया और संस्कारो का नाश होता है ।

मैं जैन हुं इसलिए मैं ये प्रतिज्ञा करता हुं कि ऐसी पापकारी प्रवृति मैं खुद नही करुंगा और नही दूसरो से कराउंगा ।

प्रश्नोत्तरी १ से ४ नंग तक की

(१) "भूल होने के बाद, उसी समय कबुल कर लेना" ये शिक्षा किस कहानी से मिली ?
(अ) कुरगडु मुनि (ब) अनाथि मुनि (क) अइमुत्ता मुनि (ड) रोहिणीया चोर

(२) पू. हरिभद्र सूरि म. ने कितने ग्रन्थो की रचना की थी ?
(अ) १४,००० (ब) १,४४४ (क) १,०४४ (ड) १४,४४४

(३) कुरगडु मुनि आहार हेतु किस वस्तु का उपयोग करते थे ?
(अ) दुधपाक (ब) चावल (क) रोटी-सब्जी (ड) सभी वस्तुए

(४) रत्न-प्रतिमा चुराते हुए व्यक्ति को किसने सुधारा ?
(अ) महेशचन्द्र (ब) ताराचन्द्र (क) फकीरचन्द्र (ड) सोमचन्द्र

(५) सिर्फ दो पल की वाणी सुनकर किस चौर के जीवन का परिवर्तन हुआ ?
(अ) लोहखुर (ब) भूरा चोर (क) रोहिणीया चोर (ड) कपिल चोर

(६) कौनसी चीज जीवन का मुख्य पाया (बुनियाद) है ?
(अ) भोजन (ब) पूजा (क) पाठशाला (ड) पानी

(७) भगवान महावीर ने किसकी सामायिक की प्रशंसा की थी ?
(अ) पूणिया श्रावक (ब) आनंद श्रावक (क) कामदेव श्रावक (ड) अंबड श्रावक

(८) मुंबई में सर्व प्रथम जिनालय कोनसे भगवान का बना था ?
(अ) पार्श्वनाथ (ब) आदिनाथ (क) शांतिनाथ (ड) महावीर स्वामी

(९) चारित्र के उपकरण कितने है ?
(अ) १५ (ब) १६ (क) १७ (ड) १८

(१०) शुभलेश्या कितनी है ?
(अ) ३ (ब) ६ (क) २ (ड) १

(११) दु:ख मे भी हसते रहना कौन सीखाता है ?
(अ) साधु (ब) दीपक (क) चन्दन (ड) गुलाब

(१२) कृष्ण महाराजा ने कितने साधु भगवंतो को विधिपूर्वक वंदन किया था ?
(अ) १५ हजार (ब) १६ हजार (क) १७ हजार (ड) १८ हजार

(१३) नवकार मंत्र के प्रभाव से "सर्प फुल की माला" किसको बनी थी ?
(अ) श्रीमती (ब) चंदनबाला (क) अमरकुमार (ड) सुदर्शन सेठ

(१४) नवपद के गुण कितने है ?
(अ) २३४ (ब) ३४५ (क) ४०५ (ड) ३४६

(१५) गोवाल ने कौनसे भगवान के कान मे खीले ठोके ?
(अ) आदिनाथ (ब) शांतिनाथ (क) महावीर स्वामी (ड) पार्श्वनाथ

(१६) निम्न तपस्याओ मे से कौनसी तपस्या अधिक दीर्घ है ?
(अ) सिद्धि तप (ब) मासक्षमण तप (क) समवसरण तप (ड) वीशस्थानक तप

(१७) मेघकुमार अपने पूर्वभव मे जब हाथी थे, तब उन्होने किस जीव पर दया की थी ?
(अ) हिरण (ब) खरगोश (क) सिंह (ड) कुत्ता

(१८) आद्रकुमार किस वस्तु को देखकर साधु बने ?
(अ) साधु (ब) देरासर (क) श्रावक (ड) प्रतिमा

(१९) भगवान महावीर को सर्वप्रथम उपसर्ग किसने किया था ?
(अ) संगम देव (ब) गोवालिया (ग्वाला) (क) कटपुतना व्यंतरी (ड) गोशाला

(२०) शालिभद्र के घर पर प्रतिदिन ९९ पेटी किसके प्रभाव से अवतरीत होती थी ?
(अ) दान (ब) तप (क) पूजा (ड) गुरुवन्दना

प्यारे बच्चो ! आपने पुस्तिका का अध्ययन किया । हमारी महेनत की सफलता के लिए ४ अंको में से २० प्रश्न चुने गये है । उसके जवाब किसी की भी सहाय लिये बिना पुस्तक के साथ भेजा हुआ "पोस्ट कार्ड" उसमें केवल अंक में जवाब लिखे । फरवरी पहले पोस्ट करे । सभी सही जवाब वाले का लक्की ड्रो होगा और ज्यादा से ज्यादा विजेता ओ को पुरस्कार दीया जाएगा ।

Question Paper of 1 - 4 Parts

1. **Which story teaches us to accept our mistakes honestly ?**
   (A) Kurgadu Muni (B) Anaathimuni (C) Aimuttamuni (D) Rohinio Thief
2. **Haribhadrasuri created how many Granthas ?**
   (A) 14,000 (B) 1,444 (C) 1044 (D) 14,444
3. **What did Kurgadu muni have as his diet ?**
   (A) Doodhpaak (B) Rice (C) Chapati - Vegetables (D) All items
4. **Who improved the person who stolen idols made from Gem stones ?**
   (A) Maheshchandra (B) Tarachandra (C) Fakirchandra (D) Somchandra
5. **Who decides to live a moral and good life by listening to MahavirSwami for 2 minutes ?**
   (A) Lohakhur (B) Bhurachor (C) Rohinichor (D) Kapilchor
6. **Which is the basic ingredient of life ?**
   (A) Food (B) Puja (C) Paathshala (D) Water
7. **Mahavir Swami had praised whose Samayik ?**
   (A) Puniya Shrawak (B) Anand Shrawak (C) Kaamdev Shrawak (D) Ambad Shrawak
8. **The Derassar of which God first located in Mumbai ?**
   (A) Godi Parshwanath (B) Adinath (C) Shantinath (D) Mahavir Swami
9. **Charitra has how many Upkarans ?**
   (A) 15 (B) 16 (C) 17 (D) 18
10. **How many Shubhleshyas are there ?**
    (A) 3 (B) 6 (C) 2 (D) 1
11. **Who teaches us to smile even in sad times ?**
    (A) Sadhu (B) Oil-lamp (C) Sandalwood (D) Rose
12. **Krishna Maharaja did Vandan with all rituals to how many Sadhu bhagvants ?**
    (A) 15,000 (B) 16,000 (C) 17,000 (D) 18,000
13. **Due to Navkar Mantra, a snake around whose neck becomes a garland ?**
    (A) Shrimati (B) Chandanbala (C) Amarkumar (D) Sudarshan Sheth
14. **How many 'Lun' does Navpada have ?**
    (A) 234 (B) 345 (C) 405 (D) 346
15. **Which Bhagwan's ears were pierced by long nails by Goval ?**
    (A) Aadinath (B) Shantinath (C) Mahavir Swami (D) Parshvanath
16. **Which Tapa (Penance) is the greatest ?**
    (A) Siddhitapa (B) Maskshaman Tapa (C) Samvasaran tapa (D) Veeshsthanak tapa
17. **On which animal had Meghkumar's purvabhava (elephant bhav) shown Mercy ?**
    (A) Deer (B) Rabbit (C) Tiger (D) Dog
18. **Seeing which thing Aadrakumar decided to become a Sadhu ?**
    (A) Sadhu (B) Derasar (C) Shrawak (D) Pratima
19. **Who did the first Upsarga to Prabhu Mahavir ?**
    (A) Sangamdev (B) Govaliya (C) Kathputli Vyantar (D) Goshala
20. **99 Boxes were sent to Shalibhadra everday because of ....**
    (A) Daan (Charity) (B) Tapa (C) Puja (D) Guruvandan

Dear Children, you have read stories and also fill colours in Picture. Now we have given a question paper containing 20 questions. You have to give correct answer in number with the help of 4 edition of this book in a postcard & post it before February. Those who give correct answer will win prize accordingly to Lucky draw.

मोक्ष मे जाने की छोटी सीड़ी

बच्चो ! आपको मोक्ष मे जाना है ? कोई आपसे एसा सवाल करे तो क्या कहेंगे । हाँ ! ठीक है ना । परन्तु आपको कोई पुछे की जल्दी मोक्ष मे जाना हो तो क्या करना ? तो तुम्हारे पास उत्तर नही है ।

तमाम आराधनाए जीव को मोक्ष गति तरफ ले जानी है । पर कुछ आराधनाए एसी है जो जीव को शीघ्रता से मोक्ष मंजील तक पहुचाँए । आज के सीधे शब्दो मे कहे तो मोक्ष मे जाने का सीधा रस्ता । तो आइए । हम देखते है की कौनसा रास्ता जल्दी पहुचाँता है ।

(१) सम्यग् दर्शन : भगवान के वचनो पर पूर्ण श्रद्धा । परमात्मा ने जो कहाँ है वो ही सत्य है और श्रावक धर्म का अंगीकार ।

(२) सम्यग् ज्ञान : परमात्मा कथित वचनो का अभ्यास करे । नही आए तो गुरु-भगवंत के पास मे जा कर अध्ययन करे । भगवान की वाणी सुनने जाए ।

(३) सम्यग् चारित्र + तप : परमात्मा के द्वारा वणिति चारित्र धर्म को अंगीकार करे ।

जिसको करने से नए कर्मो का बंधअटके और पूर्व कर्मो का नाश हो एसा सम्यग् तप बहुमानपूर्वक करे ।

नरक का शोर्ट कट

बालको ! यदि कोई हमसे पुछे नरक मे जाना है तो हमारा जवाब होगा - नहीं । क्योंकि नरक मे भयंकर दुःख है । नरक का नाम सुनते ही हमारी रातो की नींद उड़ जाती है । पसीना आने लगता है। क्योंकि जीवो को दुःख पसंद नही है, सभी को सुख चाहिए । यदि तुमसे कोई पुछे कि क्या क्या करने से नरक मे जाते है ? तो तुम्हारा उत्तर होगा - जो भी क्रिया - कलाप भगवान की आज्ञा के विरुद्ध हो वो तमाम कार्य नरक मे ले जाने वाले है । पर - तुमसे कोई सवाल करे की जल्दी से नरक मे कैसे जा सकते है ? तो चलो हम देखते है नरक की मंजिल तक पहुँचने का सीधा रास्ता..... शोर्ट कट..... पर हाँ ! इस शोर्ट कट से भूल कर भी जाना नही ।

(१) रात्री भोजन : रात्री भोजन करने से असंख्य सूक्ष्म जीवो का नाश होता है । भगवान की आज्ञा का अपमान होता है । आने वाले भवो मे दुर्गति के दरवाजे खुल जाते है । और इस भव मे भी सूक्ष्म जीवो की वजह से अनेक रोगो की उत्पत्ति होती है ।

(२) अभक्ष + अनंतकाय : इसमे बहुत जीव उत्पन्न होते है । जैसे ब्रेड, पाव, मक्खन, शहद आदि अभक्ष है, खाने लायक नही है । और अनंतकाय मे अनंत जीवो की विराधना होती है । किसी भी अनंतकाय वाली वस्तु के सुई के अग्रभाग जितने नन्हे से कण मे भी अनंत जीव होते है । तो पुरे आलु/व्याज मे कितने होंगे ? जीभ की लालसा व स्वाद के लिए इतनी विराधना करे तो नरक मे जाना आसान ही है ना !

(३) व्यसन : सिगरेट, तम्बाकु, शराब आदि के उपयोग से जीभ, जबड़ा एवं फेफड़े का केन्सर होता है । सड़ जाते है, असहनीय पीड़ा होती है । पुरा परिवार विनाश की कगार पर पहुँच जाता है ।

ये भव तो बिगड़ता ही है पर साथ मे आने वाला भव भी बिगड़ता है ।

SHORT LADDER FOR MOKSHA

Dear Children ! If somebody ask you, do you want to go in "Moksha" ? What do you reply ? Yes, is it not but if you are asked how to get "Moksha" rapidly that you don't know. All "Aradhana" take lives in "Moksha" but some "Aradhana" take lives in "Moksha Gati" fastly. In today's language we can say straight and shortcut way to "Moksha".

1). **SAMYAK DARSHAN :** Total belief on lord's words whatever lord has said that is true and acceptance of "Sharvak Dhama"

2) **SAMYAK GYAN (TRUE KNOWLEDGE) :** Study of words said by the lord, if don't know, approach "Guru Bhagvana" and learn from them and also go to listen lord's words (Pravachana)

3) **SAMYAK CHARITRA + TAPA :** Acceptance of "Charitra Dharma" said by lord "Charitra" cause stopping of new karma and acceptance of "Tapa" Dharma cause elimination of old "Karmas".

SHORT CUT TO HELL

Dear Children, If somebody ask you, do you want to go in hell (Narak), you certainly reply no, because hell is full of severe sorrows, ours sleep get disturbed if we listen name of the hell and gets sweats. Since nobody like sorrow (Dukha) everbody like happiness (Sukha).

If somebody ask you what kind of acts cause entry in the hell. You will say any act which violates the order of lord (Jinna), exactly, but if asked which ats cause hell rapidly ! Let's find shortcut to pit of hell, but do not go in that pit by mistake too.

1. **RATRI BHOJAN (Food after sunset) :** "Ratribhojan" cause elimination of innumbrable very tiny rives. It violates the order of the lord. It cause "Durgati" & birth by birth and tiny lives create lot of diseases.

2. **ABHAKSHA + ANANTKAY :** Thing that create lot of lives like bread, butter, honey etc. called "Abhaksha" we should not consume "Abhaksha" items and in "Anantkay" infinite tiny lives get harms. In one particle at point of needle of "Anantkay" is consist of infine tiny lives then how many in one patoto or onion ? Due to taste of tounge this much "Viradhana" is not way to hell ?

3. **"VYASHANA" (Bad habits) :** Use of cigrate tobacco, alcohol etc cause cancer of tounge, jaws, lungs and cause intolerable pain and family get in to troubles. Our this birth do get disturbed but coming birth also get disturbed.

सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग !

कोबा (गांधीनगर)
पि. ३८२००७

रात्रिभोजन - अभक्ष - कंदमूल - व्यसनानि - नरकमार्ग ।

संस्कार सहयोगी Sanskar Sahyogi

Karan Nayanbhai Shah
(Waslkeshvar)

Tanish Bhupendrabhai Rathod
(Mulund)

Aagam Vaibhavbhai Desai
(Mulund)

Jinashi Zaveri
(Waslkeshvar)

Shanaya Sohilbhai Shah
(Waslkeshvar)

Mokshvi Rupeshbhai Shah
(Waslkeshvar)

Saloni Pareshbhai Shah
(Mulund)

Ronika Rameshbhai Shah
(Mulund)

Priyanshi Zaveri
(Waslkeshvar)

Manishaben Dineshbhai Shah
(Waslkeshvar)

Pushpaben Nagjibhai Nisar
(Dadar)

Shri Govalia Tank Jain Sangh
Shri Navjivan Jain Sangh

Sumanbhai Kanchanbhai Shah
(Waslkeshvar)
Gyan Sahyogi - By Himanshubhai
(Mulund)

Gyan Sahyogi - By
(Waslkeshvar)

Serving JinShasan
219499
gyanmandir@kobatirth.org

पूर्णानंद प्रकाशन
धरणेन्द्रभाइ शाह : ७१२, धरती, इन्द्रप्रस्थ कोम्प्लेक्ष, सत्यनगर, बोरिवली (प.) मुंबइ - ९२ मो. ९८९२५ ५१५९०

Printed by : Naman Graphics, A'bad. : 99781 38337, 85305 89947